अभ्युदय

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा

परिपत्र

वर्ष - 13 अंक - 06/07 सितम्बर-अक्टूबर 2013

गुरु वाणी

- यह हमारा सौभाग्य है कि हमें तेरापंथ शासन जैसा धर्मसंघ प्राप्त है। हमने पूर्व जन्म में कोई सुकृत किया होगा, जिसके परिणामस्वरूप ऐसा धर्मशासन हमें मिला। बिना सद्भाग्य के ऐसे धर्मशासन की प्राप्ति कठिन है।

- परम पूज्य महामना कालूगणी जैसे महापुरुष आचार्य के शासनकाल में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा का जन्म हुआ। कालूगणी को हमारे संघीय इतिहास में पुण्यवान आचार्य के रूप में व्याख्यायित किया गया है। उनके शासनकाल में तेरापंथी महासभा की स्थापना हुई। **यह संस्था सौ वर्षों की पूर्णता के सन्निकट है। स्थापना के सौ वर्षों की संपन्नता अपने आप में बड़ी बात है।**

- हमारे धर्मसंघ में शासन को महत्त्व दिया गया है। शासन मुख्य और बड़ा होता है, व्यक्ति गौण होता है। समाज की शक्ति होती है, शासन की शक्ति होती है, संघ की शक्ति होती है। '**संघे शक्तिः कलौ युगे**' कलियुग में संघ की अपनी शक्ति होती है। संघ केवल व्यक्तियों का समूह नहीं होता। संघ के अपने सिद्धान्त होते हैं, अपनी व्यवस्था और मर्यादा होती है। **जिस संगठन में सच्चाई की शक्ति जुड़ी होती है, वह अपने आप में बलवान होता है।**

- संस्था के सम्यक् संचालन के लिए कार्यकर्ता शक्ति भी चाहिए। चाहे तेरापंथी महासभा हो, तेरापंथी सभा हो, कोई भी संस्था हो, 'मैन पावर' होना बहुत जरूरी है। कार्यकर्ता-बल के साथ सूझबूझ वाला नेतृत्ववर्ग भी होना चाहिए। **व्यक्ति में दूरदृष्टि और चिंतनशीलता हो तो शारीरिक अक्षमता में भी चिंतन के द्वारा बहुत बड़ा कार्य किया जा सकता है।**

- संस्था में मैन पावर, मनी पावर और मैनेजमेंट पावर के साथ संस्थाओं में 'मोरेलिटी पावर' (नैतिक शक्ति) भी आवश्यक होता है। हर संस्था में नैतिकता की शक्ति रहनी चाहिए। संस्थाओं के कार्यकर्ताओं को चिंतन करना चाहिए कि समाज विश्वास के साथ अनुदान दे रहा है। उस पैसे का कहीं किसी रूप में गलत उपयोग तो नहीं हो रहा है। **समाज और अनुदानदाताओं के साथ हमारे द्वारा न्याय हो रहा है या नहीं? संस्था के कण-कण में नैतिकता रहे।**

- हमारी दुनिया में संभागिता का बहुत महत्त्व है। सहभागिता व सहयोग-ये दोनों शब्द परस्पर जुड़े हुए हैं। अर्थवत्ता की दृष्टि से दोनों में निकटता है, अभिन्नता है तो भेद भी है। सहभागिता में व्यक्ति का अपना दायित्व भी जुड़ जाता है। सहयोग में जिम्मा किसी एक का होता है, अन्य लोग उसमें थोड़ा योगदान देते है, पर कार्य की सफलता-असफलता की जिम्मेदारी उन पर नहीं होती। संस्थाओं में सहभागिता और सहयोग दोनों अपेक्षित रहता है। **सहभागिता में जो आत्मीयता व दायित्वबोध होता है, वह सहयोग में नम्बर दो पर होता है।**

- सभा आदि संस्थाओं में कई लोग साथ बैठकर काम करते हैं। कार्य करते समय मतभेद की स्थिति भी आ सकती है, पर वह मनभेद में रूपान्तरित न हो, यह प्रयास रहे। कहीं-कहीं बड़ों को हर स्थिति में परोटना पड़ता है। कहीं-कहीं उन्हें झुकना पड़ता है तो कहीं कड़ाई भी करनी पड़ती है। साध्वियों के मन में कोई बात आ गई, यह जानकर आचार्य ऋषिराय महाराज साध्वियों के ठिकाने में गए और उन्हें विश्वास में लिया। **परोटना व आश्वस्त करना बड़ों के बड़प्पन की बात होती है।**

गुरु वाणी

- संस्था के अध्यक्ष सबको अपने प्रेम के धागे से बांधे रखें तो अच्छा काम हो सकता है। हर स्थिति में सहिष्णुता व शान्ति का परिचय देना चाहिए। ऐसी स्थिति में ही संस्थाएं विकास कर सकती हैं और कार्य सुचारु रूप से चल सकता है। **सहभागिता पाने के लिए मुखिया को उदारता व बड़प्पन का परिचय देना होता है, मैत्री और प्रेम की धारा बहानी पड़ती है।**

- पुरुषार्थ सदैव लक्ष्य के अनुरूप चलना चाहिए। इस पवित्र कार्य में सहभागिता व सहयोग दोनों समाविष्ट हो सकते हैं। संस्था किसी एक की नहीं, सबकी होती है। संस्था का हित चाहने वाले व्यक्ति संस्था के लिए व्यक्तिगत हित को गौण करें तो संस्था आगे बढ़ सकती है। **समाज बड़ा है, इसलिए समाज व संघ को प्रमुखता दें।**
- संकल्प पूरे होते हैं, पर केवल सपने पूरे होना कठिन है। संकल्प ऐसा बल है, जिससे बढ़िया और घटिया दोनों कार्य हो सकते हैं। संकल्प एक शक्ति है। जिसका संकल्प बल दृढ़ है, उसके लिए कुछ भी दुष्कर नहीं होता। जो विघ्नों से डरता है, कठिनाइयों से घबराता है, समझना चाहिए उसमें संकल्प बल की कमी है। विघ्न-बाधाओं के अवरोध आने पर भी प्रारंभ किए गए कार्य को बीच में जो नहीं छोड़ते, वे उत्तम श्रेणी के कार्यकर्ता होते हैं। **सपनों के साथ संकल्प जुड़ने से सफलता साकार हो सकती है।**

- कभी-कभी कार्यकर्ता का सम्मान न भी हो, अपितु कोई उसकी निन्दा भी कर दे, कार्यकर्ता उसे सुनता जाए। दूसरे दो-चार सुनाएं, उसे शान्ति से सुन लें, अवसर हो तो स्पष्टीकरण कर दें, अन्यथा शान्त रहें, गलत काम से बचें, सही काम करते समय उत्साह में कमी न आए। घबराएं नहीं और निष्क्रिय भी न बनें। मनोबल के साथ आगे बढ़ें, यह अपेक्षित है। **निंदात्मक, कर्कश व अप्रिय शब्दों को सुनना भी साधना है।**

- आज कुछ और कल कुछ, यह अनपेक्षित अस्थिरता उपयोगी नहीं है। व्यापार आदि करने वाला कभी कपड़े तो कभी रत्नों का व्यापार करे। इस तरह बार-बार निर्णय बदलने से वह कितनी सफलता पा सकेगा? सर्वत्र संकल्प बल की सख्त जरूरत है। निर्णय को चिंतनपूर्वक बदला जा सकता है, जब उसमें सफलता पाना मुश्किल लग रहा हो। **अस्थिरता में विकास असंभव है।**

- हम आचार्य भिक्षु का स्मरण करें। उनमें यदि पराक्रम और संकल्प बल नहीं होता तो केलवा में तेरापंथ का संस्थापन कैसे हो पाता? वहां उपस्थित हुई विषम परिस्थिति में वे अविचल रहे। उनमें कोई प्रबल संकल्प बल था, उनका भाग्य भी साथ दे रहा था, तभी वे सफलता के पथ पर आगे बढ़ते गए।

- आचार्य तुलसी के सामने कितने विरोध व संघर्ष आए। रायपुर, चूरू, जयपुर के कितने प्रबल विरोध हुए। घर के भीतर विरोध हुआ तो बाहर भी हुआ। आचार्य तुलसी का जीवनकाल संघर्षों की कहानी है। ऐसे संघर्षों को झेलना बिना संकल्प बल के कैसे संभव है?

- **संघ का स्थान सर्वोपरि है और संघ में आचार्य सर्वोपरि हैं। आचार्य का निर्देश अनचैलेंजेबल होता है। उसके बीच 'इगो' का व्यवधान न रहे। सबमें समर्पण का भाव रहना चाहिए। संघ हित को सामने रखकर सब साधना व विकास की दिशा में आगे बढ़ें।**

- आचार्य महाश्रमण

- **विशेष** - लाडनूं में आयोजित त्रिदिवसीय सभा प्रतिनिधि सम्मेलन में परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने जो पावन पाथेय प्रदान किया, वह तेरापंथ महासभा एवं सभाओं के पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं के लिए एक बोधपाठ बन गया। श्रावक-श्राविका समाज के लिये यह कल्याणी गुरुवाणी पथप्रदर्शक है। जिसके अमिय पगे बोल आप सबके लिए प्रस्तुत कर अभ्युदय परिवार धन्यता की अनुभूति कर रहा है।

अध्यक्षीय

- मनुष्य जन्म से नहीं, उम्र से नहीं बल्कि अपने कर्मों से महान् बनता है। भगवान महावीर का संदेश ''परस्परो ग्रहो जीवानाम्'' हजारों वर्षों के पश्चात् भी आज हमें प्रकाश स्तम्भ की तरह सद्‌मार्ग की ओर प्रशस्त कर रहा है। अहिंसा परमो धर्म व क्षमा वीरस्य भूषणम् इनके मूलमंत्र आज भी हमें विषय, विकार वासना, क्रोध, मोह, माया व स्वार्थ की आंधियों में समता का दीप जलाने हेतु प्रेरित कर रहे हैं। समदर्शी व्यक्ति की पहचान ही उनके शुद्ध व सात्विक विचार होते हैं।

- पर्युषण महापर्व जैन धर्म का महान् अध्यात्म पर्व है। जप, तप, स्वाध्याय, समता, संतोष एवं क्षमा वीरस्य भूषणम् के संदेश को लेकर यह पर्व हमें जीवन को अध्यात्म के क्षेत्र में गतिमान करने की प्रेरणा प्रदान करता है। यह पर्व आत्मशुद्धि और आत्मशक्ति के जागरण का शंखनाद् करने के लिए प्रतिवर्ष आता है। पर्युषण पर्व के नवान्हिक कार्यक्रम में हमने धर्म की आराधना करते हुए सामायिक, संवर, प्रतिक्रमण करते समय 84 लाख जीवयोनियों में जी रहे समस्त प्राणियों से क्षमा मांग कर अपने वैरभाव को समाप्त किया है।

- मानवीय दुर्बलता के कारण विचारों में, व्यवहार में व हृदय में कटुता का आना स्वाभाविक है। पर्युषण महापर्व पर पिछले वर्ष का अनुसंधान कर, अपने दायित्व निर्वहन में समाज के किसी भी श्रावक-श्राविका को मेरे व्यवहार के कारण ठेस पहुंचायी हो तो मैं विनम्रता पूर्वक सम्पूर्ण समाज से क्षमा याचना करता हूँ।

क्षमा बिना तप नही, क्षमा मिटाये ताप।
जिनके मन में है क्षमा, उनके हृदय आप।।

- मैं कृतज्ञ हूँ परम पावन, जीवन निर्माता महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमणजी का जिन्होंने मेरे जैसे साधारण कार्यकर्ता पर विश्वास किया। गुरुदेव द्वारा प्राप्त प्रतिपल आशीर्वाद ही मेरे दायित्व निर्वहन में सहायक सिद्ध हो रहा है। मंत्री मुनि श्री सुमेरमलजी स्वामी, महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्रीजी व समस्त चारित्र आत्माओं का मार्गदर्शन मेरे दायित्व निर्वहन में सहयोगी रहा है। मेरे द्वारा कोई भी अविनय असातना हुई हो, आपके निर्देश की पालना नहीं की हो तो खमत खामणा करता हूँ।

- महासभा के पदाधिकारियों की सशक्त टीम के कुशलता पूर्वक दायित्व निर्वहन से मैं अत्यधिक प्रभावित हूँ। मेरे द्वारा किसी भी आदेश/निर्देश से उनकी आत्मा को ठेस पहुंची हो तो मैं खमत खामणा करता हूँ।

- महासभा के प्रधान न्यासी श्री कमल कुमार दुगड़ व समस्त न्यास मंडल के सदस्यों की कार्यदक्षता का मैं आदर करता हूँ। मेरे कार्य सम्पादन से उनको कोई भी ठेस पहुंची हो तो खमत खामणा करता हूँ।

- महासभा कार्यकारिणी के सदस्यों का मुझे प्रतिपल वात्सल्य प्राप्त हुआ है। उनके सुझाव मेरे कार्य निर्धारण में सहभागी बने हैं। मैं अर्न्तमन से सभी से खमत खामणा करता हूँ।

- गत वर्ष में सम्पन्न संगठन यात्राओं में किसी भी श्रावक-श्राविका का मेरे किसी व्यवहार से तनिक भी हृदय दुखा हो तो सभी से खमत खामणा करता हूँ।

- आगामी 14 अक्टूबर को परम श्रद्धेय आचार्य श्री महाश्रमणजी के अमृत महोत्सव का पांचवा चरण लाडनूं की धरती पर आराध्य की अभिवंदना व वर्धापना करने के लिए समायोजित हो रहा है। आगामी 27 अक्टूबर को महासभा के गौरवशाली शताब्दी वर्ष का समापन समारोह परम श्रद्धेय आचार्य श्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य में लाडनूं में समायोजित हो रहा है व 5 नवम्बर 2013 को आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष का प्रथम चरण के माध्यम से आचार्य तुलसी के प्रति श्रद्धाभिव्यक्ति का अनुपम अवसर हमें महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य में प्राप्त हो रहा है। इन सभी अवसरों पर ज्यादा से ज्यादा श्रावक-श्राविका उपस्थित होकर कार्यक्रमों को गरिमामयी बनाने में सशक्त हस्ताक्षर बनें ऐसा विनम्र अनुरोध है. . .

- हीरालाल मालू

सम्पादकीय

- वीतराग विज्ञान की विराटता से विभूषित भगवान् महावीर को प्रणाम, पर्यूषण पर्व के चरमोत्कर्ष पर आरूढ़, अहिंसा और मैत्री की साधना में संलग्न एक-एक श्रावक-श्राविका का मैत्री के मंगल भावों से अभिषेक करते हुए ज्ञान का आलोक बांटने वाले परम प्रतापी आचार्य श्री महाश्रमणजी के पावन पादाम्बुज में कृतज्ञता भरी अभिवन्दना, अपनी समस्त भूलों की प्रतिलेखना एवं क्षमा की विनयपूर्ण अभ्यर्थना।

- बन्धुओं, हम सब एक युद्ध लड़ रहे हैं परन्तु युद्ध क्षेत्र में नहीं, अपितु धर्म क्षेत्र में। युद्ध क्षेत्र में हम शत्रु के विनाश की बात सोचते हैं किन्तु धर्म क्षेत्र में हम शत्रुता के विनाश की बात करते हैं। युद्ध क्षेत्र में हम दूसरों को मारकर विजयी होना चाहते हैं किन्तु धर्म क्षेत्र के इस युद्ध में हम स्वयं के विकारों को मिटाकर खुद पर ही विजय पाना चाहते हैं। कितना बड़ा और गहरा अन्तर है दोनों में, जिसे समझने के लिये महावीर हमें मार्ग दिखाते हैं तो गुरु हमें निर्भय होकर इस मार्ग पर आगे बढ़ने की ताकत देते हैं।

- जो धर्म युद्ध का सैनिक होता है उसको अपना परिष्कार करने व अपनी शक्ति संवर्धित करने से अवकाश ही कहां मिल पाता है? जब खुद से जग छिड़ी हो खुद की, तो कोई किस पर क्यों करे अफसोस? ऐसे रणबांकुरों के जीवन में सौहार्द, समन्वय और आत्मानुशासन तो स्वयं स्वत: स्फूर्त होकर फलीभूत होने लगते हैं।

- सचमुच भगवान् बहुत बड़ा कारसाज है। वो जानता है कि ये मनुष्य 99 के फेरे में कुछ ऐसे चक्कर लगायेगा कि उसे कभी आत्म चेतना की ओर श्रमशील होने की फुर्सत ही नहीं होगी, जबकि वो भी उसके जीवन का अभिन्न अंग है। इसीलिए उसने पर्यूषण जैसी सुन्दर संस्कृति की धरोहर हमें सौंप दी ताकि वर्ष में एक बार ही सही इस महाकुम्भ में स्नान करके उसका हर बच्चा पवित्र हो जाये, प्रदूषण से मुक्त हो जाये। उस करूणा मूर्ति द्वारा प्रदत्त वात्सल्य पूरित इस सौभाग्य को पाकर क्या हमारा जीवन सार्थक नहीं हुआ?

- बन्धुओं, राग सम्बन्धी जितनी भी विकृतियां हैं वो हमारी आत्मा को भोगों से लिप्त बनाती हैं और द्वेष सम्बन्धी विकृतियां, विद्रोह के रूप में प्रकट होती हैं। दोनों ही आत्मा के पतन का कारण हैं। ईर्ष्या हमारी ऊर्जा को नकारात्मक मोड़ देती है। इसके प्रभाव में आकर अनजाने में ही हम हमारी क्रिया को अधोगति की तरफ ले जाते हैं। दूसरे का नुकसान हम कर पायें या नहीं, पर अपने भावों को गिराकर अपनी आत्मा को मलिन हम जरूर कर लेते हैं और इस मैल को छुड़ाकर सफेदी की चमकार लाने वाला डिटर्जेंट बनाने में ये दुनिया अभी कामयाब नहीं हुई है।

- यह सच है कि पूरे पर्यूषण में इस प्रदूषण को दूर करते हुए आत्म उत्थान का संगान हमने गाया है, इसलिये आईये मैत्री भरे संसार की मधुर मनुहार करते हुए, रिश्तों में मिठास घोलकर इस क्षमा पर्व को उत्कर्ष पर ले जायें और मधु-मधु दूध में नवनीत का स्निग्ध गीत गुनगुनायें।

- आईये! चिंतन करें तेजस्वी सन्यास पर आरोहित हमारे गुरु ने हमारे कल्याण का एक भी पल, बिना गंवाये जो ज्ञान की संपदा और श्रद्धा का विरल संवेग हमें दिया है उसके प्रति सद्भावना का सच्चा आधार क्या होगा? मात्र 'कृतज्ञोऽस्मि'? हर पल सबका मंगलमय हो, हर घर सात्विक सुख संचय हो, जिसने हर क्षण यह स्वर मुखरित किया हो उसके विराट व्यक्तित्व की सौम्यता को मात्र निहारे ही नहीं अपितु उसे भीतर से महसूस करें व उनकी इस वीर वृत्ति का अनुसरण करते हुये सिंह वृत्ति से धर्म क्षेत्र में चल रही इस जंग में विजयी होकर उनका मान बढ़ायें।

- हम सौभाग्यशाली हैं कि हमारे पास जादू की पुड़िया है। अहिंसा का सिद्धान्त है तो क्षमा व मैत्री का सूत्र है, अनेकान्त का सिद्धान्त है तो आपसी समन्वय का सूत्र है, अपरिग्रह है तो आत्मा के स्तर पर मानवीय एकता एवं समानता को अवकाश है। सुनने में बहुत छोटे हैं पर जादुई प्रभाव वाले ये सूत्र जीवन में कुशल क्षेम सरसाने वाले हैं।

- **इन्हीं सूत्रों के आलोक में विकास पथ पर खड़ा आपका अपना 'अभ्युदय' परिवार गत वर्ष में हुई अपनी समस्त भूलों के लिये क्षमा प्रार्थी है। आप सबका स्नेहिल आशीर्वाद व आत्मीय सुझाव ही हमारी उत्तरोत्तर प्रगति का आधार है।**

- बन्धुओं, लम्हा-लम्हा जीवन बीत रहा है और बहुत सारे काम करने अभी बाकी हैं। आचार्य श्री महाश्रमणजी के अमृत महोत्सव के उल्लास से उल्लसित आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष की उपलब्धियों को परवान चढ़ाते हुए महासभा की 100 वर्षों की ऐतिहासिक इमारत को मीनार सी ऊंचाईयां देनी है। इसलिए हर लम्हें को सार्थक बनाने की चेतना को हम सोने न दें। आईये ऐसा पुरुषार्थ जगायें..

- वीणा बैद

★ जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा का तेरापंथी सभा प्रतिनिधि सम्मेलन सानन्द संपन्न - लाडनूं

"कार्यकर्ताओं में अभय का विकास होना चाहिए, सहनशक्ति का विकास होना चाहिए और उसे पुरुषार्थवादी होना चाहिये"

- आचार्य महाश्रमण

- संगठन की धाक, लक्ष्य की आंख और विकास की पांख का सुन्दर समुच्चय जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा आयोजित तेरापंथी सभा प्रतिनिधि सम्मेलन आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य और साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के सशक्त दिशा निर्देशन में तेरापंथ की राजधानी लाडनूं में दिनांक 10-11-12 अगस्त, 2013 को सकुशल सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन में देशभर की 253 तेरापंथी सभाओं के लगभग 750 प्रतिनिधियों ने भाग लेकर संस्था की मजबूत संगठनात्मक शक्ति का परिचय दिया।
- इस सम्मेलन के विभिन्न सत्रों में आचार्यश्री महाश्रमणजी सहित साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी, मंत्रीमुनि श्री सुमेरमलजी 'लाडनूं', मुख्य नियोजिका साध्वीश्री विश्रुतविभाजी के चिंतन मणियों से जहां संघीय विकास के नवीन पट खुले वहीं, शासन गौरव साध्वीश्री राजीमतीजी, साध्वीश्री कनकश्रीजी, मुनिश्री कुमारश्रमणजी, मुनिश्री राकेशकुमारजी, मुनिश्री दिनेशकुमारजी, मुनिश्री उदितकुमारजी, मुनिश्री योगेशकुमारजी, मुनिश्री जयन्तकुमारजी, मुनिश्री जम्बूकुमारजी के महत्वपूर्ण प्रशिक्षणों से प्रतिनिधियों में नवीन कर्मजा शक्ति का संचार हुआ।
- महासभा अध्यक्ष श्री हीरालाल मालू, प्रधान न्यासी श्री कमल कुमार दुगड़, निवर्तमान अध्यक्ष श्री चैनरूप चिण्डालिया, उपाध्यक्ष श्री विनोद कुमार बैद, महामंत्री श्री बिनोद कुमार चोरड़िया, सहमंत्री श्री बजरंग कुमार सेठिया, श्री भूपेन्द्र कुमार मूथा और सभाओं के अनेक प्रतिनिधियों ने विभिन्न सत्रों में अपने-अपने विचार प्रस्तुत किये।
- प्रतिनिधि सम्मेलन के उद्घाटन सत्र का प्रारंभ पूज्यप्रवर के मंगल मंत्रोच्चार से हुआ। महासभाध्यक्ष श्री हीरालाल मालू ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन कर विधिवत प्रतिनिधि सम्मेलन के शुभारम्भ की घोषणा की। चातुर्मास व्यवस्था समिति - लाडनूं के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र घोषल एवं तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री भंवरलाल खटेड़ ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। महासभा के उपाध्यक्ष श्री विनोद कुमार बैद ने अपने संयोजकीय वक्तव्य में सम्मेलन की प्रस्तावना एवं इसके महत्व को दर्शाते हुए कहा कि सभाओं की प्रगति की समीक्षा करना, सुषुप्त सभाओं में जागृति लाना और सशक्त सभाओं को प्रगति के प्रति और सचेष्ट करना प्रारंभ से ही इस सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य रहा है। देशभर में लगभग 511 सभाएं हैं जिनकी सार-संभाल हेतु प्रतिनिधि सम्मेलन की उपयोगिता को उजागर किया।
- महासभा के अध्यक्ष श्री हीरालाल मालू एवं प्रधान न्यासी श्री कमल कुमार दुगड़ ने देश के विभिन्न क्षेत्रों से आये हुए प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए अपने कर्तव्य निर्वहन के प्रति कटिबद्धता एवं सजगता के साथ गुरू आस्था पर बल दिया।
- परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमणजी ने पावन पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि वर्ष में एक बार महासभा द्वारा आयोजित प्रतिनिधि सम्मेलन में सभा प्रतिनिधियों का मिलन होता है तो अनेक प्रकार की जानकारियाँ, विचार विनिमय, मार्गदर्शन प्राप्त होता है। पूज्यप्रवर ने कहा कि यह सम्मेलन तेरापंथ समुदाय का सम्मेलन है। हमारी दृष्टि में सभाओं का महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि ये विशिष्ट संस्थाएं हैं। तेरापंथी महासभा इनकी देखरेख व मार्गदर्शन करती है।
- परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी ने **नियति और पुरूषार्थ** विषय पर तेरापंथी सभा प्रतिनिधि सम्मेलन में समागत महासभा व सभाओं के प्रतिनिधियों, पदाधिकारियों को प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि कई बार ऐसा देखा जाता है कि पुरुषार्थ करने पर भी नियति के कारण सफलता नहीं मिलती है परंतु आदमी को पुरुषार्थवादी होना चाहिए, उसे पुरुषार्थ कभी छोड़ना नहीं चाहिए।
- कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन करते हुये पूज्यप्रवर ने कहा कि समाज की अनेक गतिविधियाँ महासभा द्वारा संचालित होती है। महासभा के सभी कार्यकर्ताओं में कार्य के प्रति लगन व समर्पण की भावना है।
- इसी क्रम में सहभागिता और सहयोग के बारे में विशेष मार्गदर्शन प्रदान करते हुए आचार्यप्रवर ने बताया कि सहभागिता में जितने लोग जुड़े होते हैं वे जिम्मेदारी के साथ जुड़ते हैं और सहयोगियों में जिम्मेदारी नहीं होती है। संस्था को सहभागिता चाहिये। सहभागिता में जो अपनत्व होता है, जिम्मेदारी होती है वह सहयोग में नहीं होता। पूज्यप्रवर ने इस बात पर जोर दिया कि सहभागिता या सहयोग लेने की कला भी होनी चाहिए। एक दूसरे को सहना चाहिए, कहना चाहिये और शांति से रहना चाहिए। ऐसी भावना होने से संस्था का कार्य सुचारु रूप से चलता है।
- प्रगति एवं निष्पत्ति को प्रशस्त करने वाले इस प्रतिनिधि सम्मेलन के अन्तिम सत्र में **सफलता का सोपान, संकल्प व नियंत्रण शक्ति** विषय पर उपस्थित संभागियों को बोध पाठ देते हुए गुरूप्रवर ने फरमाया कि इस प्रकार के सम्मेलनों में मिलन होने से एक स्फूर्ति आती है। अच्छे उद्देश्य के साथ मिलन निष्पत्तिदायक होता है। हमारे श्रावकों में अच्छी निष्ठा, श्रद्धा व लगन है।
- **साध्वीप्रमुखाश्री ने 'महासभा की स्थापना के महत्वपूर्ण कारणों' पर ध्यानाकर्षित करते हुये फरमाया** कि महासभा आज जिस मुकाम पर पहुंची है वह संघीय दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। उस संस्था को सफल माना गया है जो अपने मैन पावर का उपयोग करे। अच्छे काम को कल पर नहीं छोड़ना चाहिए। बुरे काम में तत्काल निर्णय नहीं लेना चाहिए। सफलता साहस में है, आत्मविश्वास में है। अपने बारे में, समाज के बारे में, अपनी जीवनशैली, परिवार की जीवनशैली, समाज की जीवनशैली के बारे में सकारात्मक सोच रखते हुए कार्य को गति प्रदान करनी चाहिए।
- **मंत्री मुनि श्री सुमेरमलजी ने 'धर्म की अनुपालना एवं उसकी प्रक्रिया' के संदर्भ में** जानकारी प्रदान करते हुए बताया कि जब प्रत्येक कार्य धर्म के साथ एवं उसके अनुरूप होता है और जब कोई व्यक्ति अपनी प्रक्रिया को कायम रखकर आगे बढ़ता है तो वह सफल माना जाता है। इस प्रसंग को उन्होंने कुछ उदाहरण देते हुए विस्तृत रूप में स्पष्ट किया।
- **मुनिश्री कुमारश्रमणजी ने 'कार्यकर्ता व नेतृत्वकर्ता की अर्हताओं'** के बारे में प्रशिक्षण प्रदान करते हुए बताया कि नेता वही हो सकता है जो अच्छा कार्यकर्ता रहा हो। कार्यकर्ता में सेवा भावना, तेरापंथ धर्मसंघ की मूलभूत जानकारी, तत्वज्ञान की जानकारी होनी चाहिए। सेवा भावना, टीम वर्क की भावना व जहाँ कहीं भी संकट की स्थिति आये तो स्वयं आगे आये और क्रेडिट के समय कार्यकर्ता को आगे रखना चाहिए।

- **मुनिश्री उदित कुमारजी ने 'ज्ञानशाला' के संदर्भ में** अपने प्रेरणादायी उद्‌बोधन में बताया कि हमें संघ की मान्यता व परंपरा से अनभिज्ञ नहीं रहना चाहिये। जहां एक्य भाव होता है उस परिवार व समाज में एकता बनी रहती है। संघीय भावना व्यक्ति को आगे बढ़ाने वाली होती है। हमारे संघ की नींव त्याग, तपस्या, निष्ठा व समर्पण पर टिकी हुई है। सकारात्मक भाव से काम करते हुए संघ की सभी प्रवृत्तियों को कुशलतापूर्वक चलाना चाहिये और उन्हें संसाधन उपलब्ध कराया जाना चाहिये।

- **मुनिश्री जयन्त कुमारजी ने 'जैन विद्या पाठ्यक्रम व संस्कार निर्माण' के बारे में** विशेष जानकारी प्रदान करते हुए बताया कि समण संस्कृति संकाय का यह प्रयास है कि आचार्य श्री तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष में अधिकाधिक विद्यार्थी जैन विद्या परीक्षा में सम्मिलित हों ताकि इस शताब्दी वर्ष की सार्थकता सिद्ध हो सके।

- **मुनिश्री राकेशकुमारजी ने 'सहयोगी नहीं सहभागी चाहिये'** विषय पर अपना वक्तव्य प्रदान करते हुए बताया कि सहभागी का तात्पर्य है कि हम संकुचित सोच नहीं रखें। हमारा कोई साधार्मिक भाई कष्ट में नहीं रहे, इसके लिए हमें अपना दृष्टिकोण बड़ा बनाना होगा। सभा के अध्यक्ष/मंत्री नेता नहीं बल्कि समाज के सेवक हैं। सामुदायिक चेतना व भावना को जगाकर सबके समन्वय से स्वस्थ समाज का निर्माण किया जा सकेगा।

- **शासन गौरव साध्वीश्री राजीमतीजी ने अपने ओजस्वी वक्तव्य में 'व्रत चेतना' पर प्रकाश डालते हुये कहा** कि संस्कृति की सुरक्षा नहीं होने से समाज टूटता है। व्रत की चेतना, संयम की चेतना का विकास होना चाहिए। उन्होंने कहा कि तेरापंथ समाज के आगे बढ़ने का प्रमुख कारण है साधार्मिक वात्सल्य, परस्पर सहयोग व सम्मान।

- **शासनश्री मुनिश्री किशनलालजी** ने उपस्थित प्रतिनिधियों को अपनी इच्छा शक्ति को दृढ़ बनाकर **'प्रेक्षाध्यान का अभ्यास व विकास'** करने की प्रेरणा प्रदान की। हमें राग-द्वेष से मुक्त होना चाहिये तभी अच्छे समाज की कल्पना की जा सकती है। व्रतदीक्षा में सहयोग हमारा कल्याण कारक होगा। ऐसी प्रेरणा प्रदान की।

- **मुनिश्री जम्बू कुमारजी** ने आगाज करते हुये कहा कि 5 नवम्बर 2013 से आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष के शुभारम्भ का शुभ दिन है और 25 अक्टूबर 2014 को इसका परम प्रकर्ष हम देखेंगे। अतः सभी के मन, वचन और काया में एक ही धुन रहनी चाहिये। उन्होंने कहा कि धुन का तात्पर्य है हम उनके नाम **"ओम् जय तुलसी"** का स्मरण करें। उन्होंने आगे कहा कि आचार्य तुलसी ने इंसानियत और मनुष्यता के लिए अणुव्रत आंदोलन प्रारंभ किया। गरीब की झोपड़ी से लेकर राष्ट्रपति भवन तक की यात्रा की। अतः इस वर्ष में अणुव्रत का खूब प्रचार-प्रसार होना चाहिये। अणुव्रत के संकल्प को स्वीकारें। कम से कम एक लाख अणुव्रती बनाने का प्रयास करें। अगर इस शताब्दी वर्ष में अधिक से अधिक अणुव्रती प्रचेता बनते हैं तो यह एक बड़ा काम हो सकता है।

- **मुनिश्री दिनेशकुमारजी ने 'तत्वज्ञान' के बारे में** जानकारी प्रदान करते हुए बताया कि सभा संस्था के पदाधिकारीगण वही बनें जिसमें तत्वज्ञान हो। श्रावक अपने आप से यह जिज्ञासा करे कि वह कौन है, उनकी पहचान क्या है? व्यक्ति स्वयं की खोज करे और यह तभी संभव है जब उस व्यक्ति को तत्वज्ञान की जानकारी हो।

- **महासभा के अध्यक्ष एवं आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष के संयोजक श्री हीरालाल मालू** ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि सन् 1988 से सभा प्रतिनिधियों का सम्मेलन प्रारंभ हुआ और तब से लेकर आज तक यह निरंतर सफलतापूर्वक आयोजित किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ में जो अनुशासन, मर्यादा है वह अन्य धर्मसंघ में नहीं है। अध्यक्ष महोदय ने सभा के लिए करणीय कार्यो के बारे में जानकारी प्रदान की। उन्होंने सभा संचालन के संदर्भ में जानकारी प्रदान करते हुए कहा कि सभी सभाओं के संविधान में एकरूपता (महासभा द्वारा निर्धारित प्रारूप के अनुसार) होनी चाहिए, सभी सभाओं में 30 जून तक चुनाव हो जाने चाहिए, दो कार्यकाल के उपरान्त अध्यक्ष का चुनाव अवश्य होना चाहिए, समाज के अधिकाधिक व्यक्तियों को सभा का सदस्य बनाये जाने के प्रयासों पर बल दिया।

- आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह के संदर्भ में जानकारी प्रदान करते हुए महासभा अध्यक्ष श्री हीरालाल मालू ने शताब्दी वर्ष में 100 दीक्षाएं, 100 अणुव्रत प्रचेता, एक लाख अणुव्रती बनाने, आचार्य तुलसी के नाम पर डाक टिकट एवं ट्रेन का नामकरण करवाने सहित अनेक करणीय कार्यों व उनकी प्रगति से अवगत कराया। उन्होंने काफी सभाओं से प्राप्त संकल्प पत्रों की संख्या पर संतोष व्यक्त किया एवं अन्य सभाओं में भी इसकी कार्य प्रगति की अपेक्षा जाहिर की।

- उपस्थित प्रतिनिधियों को सम्बोधित करते हुए अध्यक्ष श्री हीरालाल मालू ने हर्षोल्लास के साथ कहा कि इस शताब्दी वर्ष में 11 लाख रुपये के 101 स्वागत समिति सदस्य बनाने का लक्ष्य पूरा कर लिया गया है। तुलसी शताब्दी वर्ष एवं महासभा शताब्दी वर्ष के अवसर पर 100 तेरापंथ भवन बनाने के संदर्भ में भी विस्तृत जानकारी प्रदान की।

- **महासभा के प्रधान न्यासी श्री कमल कुमार दुगड़** ने प्रतिनिधि सम्मेलन में समागत प्रतिनिधियों को सम्बोधित करते हुए अपने वक्तव्य में कहा कि आचार्य तुलसी एक महान रचनाकार एवं युग निर्माता थे। आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष एवं महासभा शताब्दी वर्ष हमारे सामने है। युगप्रधान, राष्ट्रसंत, गणाधिपति आचार्यश्री तुलसी का जन्म शताब्दी वर्ष राष्ट्र के लिए पर्व बन जाए, भावी संतति उनके मार्ग का अनुसरण करती रहे, ऐसा सलक्ष्य कार्य करना है जिससे कि यह समारोह पूरे राष्ट्र के लिए अनुकरणीय बन जाए। आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह के संदर्भ में उन्होंने कहा कि इस शताब्दी वर्ष समारोह के **प्रतीक चिन्ह 'लोगो'** का अनावरण राष्ट्रपति द्वारा किया गया। व्यापक स्तर पर कार्य करने का लक्ष्य रखते हुए 80-90 महान विभूतियों से संपर्क स्थापित किया गया। इसके अतिरिक्त उन्होंने अन्य शासकीय स्तर पर करणीय कार्यों के अंतर्गत किये गये कार्य व अवशेष कार्यों के बारे में जानकारी प्रदान की।

- महासभा शताब्दी वर्ष के संदर्भ में प्रधान न्यासी श्री कमल कुमार दुगड़ ने कहा कि जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा तेरापंथ धर्मसंघ की सबसे पुरानी एवं सर्वोच्च संस्था है। स्थापना से शताब्दी वर्ष तक की यात्रा में उसके साथ अनेकानेक महिमा-मंडित पृष्ठ जुड़े हुए हैं। इसका 100 वर्षों का गौरवशाली इतिहास है। कई महान विभूतियों के परिश्रम, समर्पण, कष्ट सहन एवं त्याग से यह संस्था बनी और अब यह शताब्दी वर्ष मना रही है जो पूरे धर्मसंघ के लिए गौरव का विषय है। हमें उन विभूतियों का सम्मान करना है।

- सभा भवन निर्माण योजना के संदर्भ में प्रधान न्यासी श्री कमल कुमार दुगड़ ने अपने वक्तव्य में कहा कि आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष एवं महासभा शताब्दी वर्ष के पावन प्रसंग पर भारत के विभिन्न क्षेत्रों एवं सुदूर क्षेत्रों में 100 तेरापंथ भवन का निर्माण प्रस्तावित है। तेरापंथ भवन निर्माण योजना की विस्तृत रूपरेखा की जानकारी उन्होंने उपस्थित प्रतिनिधियों को प्रदान किया।

- **महासभा के निवर्तमान अध्यक्ष श्री चैनरूप चिण्डालिया ने 'सभाओं का सम्यक संचालन' विषय पर** पावर प्वायंट के माध्यम से अपनी प्रस्तुति प्रदान करते हुए बताया कि आज पूरे देश व विदेश में लगभग 511 तेरापंथी सभाएं धार्मिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक, सामाजिक, साहित्यिक और मानव सेवा के क्षेत्र में सम्पूर्ण निष्ठा और समर्पण भाव से कार्य कर रही है। उन्होंने आगे कहा कि सभाएँ अपने उद्देश्यों की पूर्ति तभी कर सकती है जब वे सम्यक रूप से संचालित हो। सभाओं की सफलता कुशल नेतृत्व पर निर्भर करती है जिसके लिए दूरदृष्टिसम्पन्न, संगठन व उसके सिद्धान्तों के प्रति आस्था, सौहार्द और समन्वय की भावना, टीमवर्क, कुशल संप्रेषण, सहकर्मियों के साथ सद्भाव के गुण का होना आवश्यक है।

- **महासभा के महामंत्री श्री बिनोद कुमार चोरड़िया** ने **'महासभा के गौरवशाली इतिहास'** का स्मरण करते हुये कहा कि महासभा वर्तमान में ज्ञानशाला, उपासक श्रेणी, राष्ट्रीय संस्कार निर्माण शिविर, मेधावी छात्र प्रोत्साहन परियोजना, महासभा शिक्षा सहयोग योजना, जैन भारती आदि का संचालन कर रही है। इसके अतिरिक्त महासभा के पास सहभागिता योजना, आचार्य महाप्रज्ञ स्मारक स्थल निर्माण, आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह, महासभा शताब्दी वर्ष जैसी कई महत्वपूर्ण परियोजनाएं हैं जिनका संचालन महासभा द्वारा किया जा रहा है। आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी एवं महासभा शताब्दी वर्ष के अवसर पर सम्पूर्ण भारतवर्ष में 100 तेरापंथ भवन निर्माण की योजना चल रही है। अनुशास्ता के केन्द्रीय सचिवालय के संचालन और व्यवस्था के नियोजन का दायित्व भी महासभा को प्रदान किया गया। कार्य क्षेत्र में श्रेष्ठता हेतु प्रतिबद्धता, सुव्यवस्था, गुणवत्ता एवम् निर्धारित मानदण्डों के अनुरूप कार्यप्रणाली के आधार पर कार्य करने पर महासभा को ISO प्रमाण पत्र प्राप्त है। महासभा की विकास यात्रा में यह एक मील का पत्थर है।

- **'महासभा और सभाओं का पारस्परिक संबंध'** विषय पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए महामंत्री ने कहा कि महासभा का सभाओं के साथ आपसी संपर्क का सबसे महत्वपूर्ण साधन है - संवाद् जो फोन के माध्यम से, पत्राचार के माध्यम से, संगठन यात्रा के दौरान आपसी विचार-विमर्श व समाचारों के आदान-प्रदान द्वारा संपादित होता है। सभाओं को चाहिये कि वे अपने क्षेत्र के समर्पित कार्यकर्ताओं के बारे में आवश्यक जानकारी महासभा को अवश्य प्रेषित करें। कोई समस्या उत्पन्न हो जाए तो यथाशीघ्र उसे स्थानीय स्तर पर समाहित करने का प्रयत्न करें अन्यथा अविलंब महासभा कार्यालय को सूचित करें ताकि विवाद ज्यादा लंबा न चले। महासभा के पदाधिकारीगण एवं कार्यकर्तागण संगठन यात्रा के द्वारा सभाओं की सार-संभाल करते हैं एवं उन्हें संस्था संचालन के बारे में, महासभा की गतिविधियों के बारे में एवं संस्था संचालन संबंधी अन्य जानकारी उन्हें प्रदान करते हैं। उपस्थित सभाओं के प्रतिनिधिगण से उन्होंने आह्वान किया कि वे अपने-अपने क्षेत्र में सभा द्वारा किये जा रहे कार्य के बारे में, गतिविधियों के बारे में एवं अन्य जो भी जानकारी हो उसकी सूचना महासभा को अवश्य प्रेषित करें ताकि उसके बारे में समय पर चिंतन, निर्णय और क्रियान्विति हो और बिना किसी विलंब के उसकी उपयोगिता सामने आए और तेरापंथी सभा तथा महासभा दोनों का कर्तृत्व सामने आए।

- **जय तुलसी फाउण्डेशन के प्रबंध न्यासी श्री सुरेन्द्र कुमार दुगड़** ने पावर प्वायंट के माध्यम से जय तुलसी फाउण्डेशन की गतिविधियों, आर्थिक सहायता प्राप्त परिवारों की संख्या आदि के बारे में जानकारी प्रस्तुत की। उन्होंने सभा प्रतिनिधियों से आह्वान किया कि उनके क्षेत्र में शिक्षा, चिकित्सा, संपोषण के लिए यदि कोई परिवार जरूरतमंद है तो उसकी जानकारी जय तुलसी फाउण्डेशन को अवश्य दें ताकि हम उन्हें आवश्यक सुविधाएं मुहैया करा सकें।

- **ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के राष्ट्रीय संयोजक श्री सोहनराज चोपड़ा** ने ज्ञानशाला की उपयोगिता, उसके प्रभाव तथा बच्चों में संस्कार निर्माण में उसके योगदान का उल्लेख किया।

- **उपासक श्रेणी के राष्ट्रीय संयोजक श्री डालमचंद नौलखा** ने कहा कि उपासक और ज्ञानशाला ऐसी संघीय महत्वपूर्ण संघीय प्रवृत्ति है जो धर्मसंघ की अन्य प्रवृत्तियों की जड़ों को मजबूती प्रदान करने वाली प्रवृत्ति है। इसका दायित्व प्रारंभ से ही महासभा को प्राप्त है और महासभा कुशलतापूर्वक इसका निर्वहन कर रही है। उन्होंने उपासकों की संख्या में निरंतर हो रही वृद्धि को समाज के आध्यात्मिक विकास के लिए सराहनीय कदम बताया।

- **महासभा के उपाध्यक्ष एवं राष्ट्रीय सहभागिता प्रभारी श्री किशनलाल डागलिया ने सहभागिता योजना के उद्देश्यों एवं इसके प्रारूप** की जानकारी प्रदान करते हुए कहा कि इस योजना में एकत्रित राशि का उपयोग सभा संपोषण के साथ-साथ संस्कार निर्माण की विविध गतिविधियों तथा धर्मसंघ की विभिन्न प्रवृत्तियों के सम्यक संचालन हेतु किया जाता है। श्री डागलिया ने इस योजना का प्रारूप प्रस्तुत करते हुए बताया कि संपूर्ण राशि का संग्रह महासभा के अंतर्गत स्थापित कोष में हो जिसका 50 प्रतिशत स्थानीय संस्थाओं को सभा संचालन एवं संघीय प्रवृत्तियों विशेषतः उपासना कक्ष, ज्ञानशाला, जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान, अणुव्रत, स्थानीय स्तर पर चिकित्सा सहयोग एवं छात्रवृत्ति आदि कार्यक्रमों के संचालन हेतु उपलब्ध कराया जाएगा। बाकी राशि में से 15 प्रतिशत राशि जय तुलसी फाउण्डेशन को प्रदान की जाएगी।

- **महासभा के सहमंत्री श्री बजरंग सेठिया ने संविधान पर** अपना वक्तव्य देते हुए कहा कि सभी सभाएं महासभा द्वारा सभाओं के लिए निर्धारित संविधान को स्वीकृत करके एक प्रति पर हस्ताक्षर करके महासभा कार्यालय को अवश्य भिजवाएं। उन्होंने कहा कि काफी सभाओं से संविधान की हस्ताक्षरित प्रति प्राप्त हो चुकी है परंतु अभी भी कई सभाओं से यह कार्य होना अवशिष्ट है। अतः सभाओं के प्रतिनिधि इसे अत्यावश्यक समझते हुए इस कार्य को शीघ्रता से संपादित करें। श्री बजरंग जी सेठिया ने संविधान की एकरुपता के साथ ही सभी सभाओं में चुनाव प्रक्रिया संबंधी विशेष जानकारी प्रदान की।

- **महासभा के उपाध्यक्ष एवं समस्या समाधान प्रकोष्ठ के संयोजक श्री विनोद बैद** ने प्रतिनिधियों का ध्यान समाज के समक्ष उत्पन्न कुछ समस्याओं की ओर आकर्षित करते हुए आह्वान किया कि वे उनके समाधान के प्रति जागरूकता दिखाएँ। उन्होंने कहा कि संगठन को सुदृढ़ करने के लिए संस्थाओं को युगीन अपेक्षाओं के अनुरूप संचालित करना होगा क्योंकि कोई भी संस्था तभी सुदृढ़ हो सकती है जब उसका संगठन व व्यवस्था पक्ष सुदृढ़ हो। अपनी कार्य प्रणाली में भी निरंतर सुधार की अपेक्षा के साथ सभाओं का चुनाव समयबद्ध हो, संविधान के

प्रति निष्ठा और अनुशासन के प्रति जागरूकता हो। सभाओं का दायित्व है कि वे अन्य स्थानीय संघीय संस्थाओं के साथ तालमेल रखते हुए महासभा की प्रवृत्तियों का समयबद्ध आयोजन करें। चारित्रआत्माओं की पदयात्रा की समुचित व्यवस्था, श्रावक-श्राविका समाज की सार-संभाल, उनकी स्थितियों की जानकारी और समस्याओं के समाधान में सहयोग, सामुदायिक चेतना के विकास में पूज्य प्रवरों के निर्देशानुसार कार्यों का संचालन आदि प्रमुख कार्य हैं, जिनके प्रति सभाओं को जागरूकता बहुत अपेक्षित है।

- **'जैन भारती' की संपादिका डॉ. शान्ता जैन** ने जैन भारती के संदर्भ में विचार व्यक्त करते हुए कहा कि इस वर्ष इस पत्रिका के संपादकीय दायित्व का भार ग्रहण करने के उपरान्त हमारा यह प्रयास रहा है कि इसकी गुणवत्ता में और अधिक निखार आये एवं ग्राहक संख्या में भी वृद्धि हो। इसके लिए हम सभी को मिलकर प्रयास करना होगा। जैन भारती पत्रिका प्रत्येक परिवार तक पहुँचे इस हेतु हमें सम्मिलित रूप में प्रयास करना होगा।
- **'अभ्युदय' संपादिका श्रीमती वीणा बैद की अनुपस्थिति में महासभा के सहमंत्री श्री भूपेन्द्र कुमार मूथा** ने अभ्युदय के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त करते हुये कहा कि अभ्युदय प्रतिमाह प्रकाशित होने वाली महासभा की पत्रिका है जिसका संपादन कार्य श्रीमती वीणा बैद द्वारा कुशलतापूर्वक किया जा रहा है। उन्होंने उपस्थित सभा प्रतिनिधियों को इस पत्रिका के बारे में जानकारी प्रदान करते हुए कहा कि इसे केवल अपने कार्यालय तक सीमित नहीं रखें और न ही आजीवन सदस्य इस पत्रिका को अपने कमरे तक सीमित रखें। इसे अवश्य पढ़ें क्योंकि इसमें गुरुवाणी को संकलित करके गुरुवाणी कॉलम के अंतर्गत प्रकाशित किया जाता है। **अमृत पुरुष अमृत वर्षा** कॉलम अभ्युदय का महत्वपूर्ण प्रेरणा प्रदान करने वाला कॉलम है एवं सभाओं द्वारा संपादित कार्यों का विवरण प्रकाशन उत्साहवर्धक है। सभाओं की बढ़ती जागरूकता इसका प्रमाण है। उन्होंने कहा कि इस बार का अंक महासभा से सम्बन्धित है। इसमें 100 वर्षों के इतिहास को संक्षिप्त रूप में आपके समक्ष प्रस्तुत किया गया है।
- **महासभा के उपाध्यक्ष एवं प्रतिनिधि सम्मेलन के संयोजक श्री विनोद बैद** ने आचार्यप्रवर, साध्वीप्रमुखाश्री, मंत्री मुनिश्री सुमेरमलजी सहित सभी चारित्रात्माओं के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। उन्होंने सम्मेलन के आयोजन में महासभा के संगठन प्रभारी श्री तुलसी कुमार दुगड़, कार्यकारिणी सदस्य श्री मनोज सिंघी, श्री जितेन्द्र सेठिया, श्री रोशनलाल डागलिया, सहभागिता प्रभारी श्री मानमल सेठिया एवं उनकी टीम, उपासक श्री महेन्द्र बैद के अतिरिक्त चातुर्मास व्यवस्था समिति, लाडनूं के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र घोषल, मंत्री श्री भागचन्द बरड़िया, तेरापंथी सभा-लाडनूं के अध्यक्ष श्री भंवरलाल खटेड़ एवं अन्य कार्यकर्ताओं के साथ-साथ प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से जुड़े सभी लोगों के प्रति आभार प्रकट किया।
- सम्मेलन के अलग-अलग सत्रों का सफल व समयबद्ध संयोजन महासभा के सहमंत्री श्री जी. भूपेन्द्र मुथा, उपाध्यक्ष श्री विमल सुराणा एवं श्री विनोद बैद एवं कोषाध्यक्ष श्री सुरेन्द्र कुमार बोरड़ ने सफलतापूर्वक किया।
- विभिन्न सत्रों में आभार ज्ञापन महासभा के उपाध्यक्ष श्री महेन्द्र कुमार धारीवाल, श्री सुकनराज परमार एवं श्री विनोद बैद न्यासी श्री बिमल कुमार नाहटा तथा श्री पन्नालाल बैद ने किया।
- **विशेष आकर्षण** 12 अगस्त को महासभाध्यक्ष श्री हीरालाल मालू ने श्रेष्ठ सभा के रूप में साउथ कोलकाता सभा, मुम्बई सभा व विशिष्ट सभा के रूप में फरीदाबाद सभा व नोखा सभा के चयन की घोषणा की।
- प्रतिनिधि सम्मेलन के त्रिदिवसीय कार्यक्रम के प्रथम दिन रात्रि में समागत प्रतिनिधियों की जिज्ञासाओं को स्वयं परम पूज्य आचार्यप्रवर ने समाहित किया। जिससे एक-एक संभागी ने संतोष व प्रफुल्लता का अनुभव किया।
- **ज्ञानशाला लोगो का पंजीकरण** चैन्नई के कार्यकर्ता श्री अशोक डागा के प्रयास से ज्ञानशाला लोगो का पंजीकरण महासभा के नाम से हो गया। इस पंजीकरण की मूल कॉपी प्रमाण पत्र सहित महासभाध्यक्ष श्री हीरालाल मालू, ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के राष्ट्रीय संयोजक श्री सोहनराज चौपड़ा व एडवोकेट श्री अशोक डागा ने पूज्यप्रवर को भेंट की।
- उपरोक्त महत्वपूर्ण उपलब्धियों के साथ महासभा एवं संलग्न सभाओं के समीक्षात्मक चिंतन मंथन के साथ प्रतिनिधिगण गुरूदृष्टि का मार्गदर्शन पा क्रियान्वित के दृढ़ संकल्प और नव उन्मेष के साथ प्रगति की दिशा में गतिमान हो उठे। **प्रतिनिधि सम्मेलन** की निष्पत्ति ही उसकी सफलता का आधार है।

★ उपासक शिविर - लाडनूं

गुणवत्ता अभिवर्धन के साथ उपासक श्रेणी की ऊंचाई बनी और भी फलदायी...

दिनांक 27 जुलाई 2013, लाडनूं में पूज्यप्रवर के सान्निध्य में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के तत्वावधान में उपासक प्रशिक्षण शिविर का सफल आयोजन हुआ। यह उपासक शिविर दो चरणों में आयोजित हुआ। प्रथम चरण 27 जुलाई से 4 अगस्त तक था, इसमें नये उपासक बनने वालों को प्रशिक्षण दिया गया। द्वितीय चरण 4 से 6 अगस्त तक आयोजित हुआ। प्रवक्ता उपासकों की त्रिदिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला के रूप में इसकी समायोजना थी। इस कार्यशाला में प्रशिक्षण का मुख्य विषय था - **'तुलसी विचार दर्शन'**।

- प्रथम चरण में शिविर संभागियों की कुल संख्या 77 थी इसमें 58 नये एवं 19 पुराने सहयोगी उपासक थे। द्वितीय चरण जो कि त्रिदिवसीय कार्यशाला के रूप में समायोजित था, उसमें भाग लेने वाले उपासकों की कुल संख्या 55 थी। 27 जुलाई को मध्याह्न में शिविर में भाग लेने के इच्छुक भाई-बहिनों की प्रवेश परीक्षा का आयोजन हुआ। ज्ञातव्य है कि प्रवेश परीक्षा में उतीर्ण भाई-बहिन ही शिविर में प्रशिक्षण प्राप्त कर सकते हैं। इससे पूर्व दिल्ली, कोलकाता में चारित्रआत्माओं के सान्निध्य में प्रवेश परीक्षा का आयोजन हुआ एवं इसमें चयनित भाई-बहिनों को शिविर में सीधा प्रवेश दिया गया।

- पूज्यप्रवर ने 28 जुलाई को शिविर संभागी भाई-बहिनों को शिविर उपसंपदायें ग्रहण करवाई एवं खूब निष्ठा के साथ शिविर में प्रशिक्षण प्राप्त करने की पावन प्रेरणा प्रदान की। शिविर दिनचर्या के अनुसार जागरण प्रातः 4.30 से योगनिन्द्रा रात्रि 10.00 बजे तक निर्धारित पाठ्यक्रमानुसार शिविर संभागियों को सघन प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

- दिनांक 5 अगस्त को शिविर समापन समारोह आयोजित हुआ। पूज्यप्रवर ने महती कृपा करते हुये '**बनो उपासक**' विषय पर उपासक श्रेणी के बारे में अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रेरणादायी पाथेय दिया। पूज्य आचार्यप्रवर ने उपासक श्रेणी को गुरुदेव तुलसी के अनेक अवदानों में एक विशिष्ट अवदान बताते हुये फरमाया कि इस श्रेणी में निखार आ रहा है। गुणवत्ता और संख्या दोनों का विकास हो रहा है। अनेक-अनेक उपासक-उपासिकायें पर्यूषण आराधना करने के लिये निर्दिष्ट क्षेत्रों में पहुंचते हैं और धर्माराधना में सहयोग देते हैं। इस श्रेणी की उपयोगिता स्पष्ट प्रतीत हो रही है। अनेक क्षेत्रो से पर्यूषण पर्व पर उपासकों को ही भिजवाने की मांग आती है, यह विशेष बात है। पूज्यप्रवर ने उपासकों को गुणवत्ता वृद्धि और आचरण शुद्धि की पावन प्रेरणा प्रदान की।

- महासभा की ओर से शिविर व्यवस्था प्रभारी श्री विनोद बांठिया ने संभागियों को सुंदर व्यवस्थायें उपलब्ध करवाई। शिविर प्रायोजक के रूप में श्री विनोद बांठिया महासभा को अपनी महत्वपूर्ण सेवायें दे रहे हैं। इसके लिये महासभा उनके प्रति आभार व्यक्त करती है।

- दिनांक 4 अगस्त को 'सहयोगी' और 'प्रवक्ता' दोनों श्रेणी के उपासकों की चयन प्रक्रिया (परीक्षा) का आयोजन हुआ। जिसमें 33 सहयोगी उपासक के रूप में व 13 प्रवक्ता उपासक के रूप में चयनित हुये।

- नोट :- **इस प्रवचन के संपादित अंशों को यथाशीघ्र अभ्युदय के आगामी अंकों में प्रकाशित किया जायेगा।**

★ ज्ञानशाला स्नातक प्रशिक्षक दीक्षान्त समारोह - लाडनूं

पास आते जा रहे हैं दूर के संकल्प भी. . . 'शुभ भविष्य है सामने' — दिनांक 14 अगस्त 2013, सुधर्मा सभा में पूज्यप्रवर के सान्निध्य में आयोजित भव्य दीक्षान्त समारोह में 321 स्नातक प्रशिक्षकों को तेरापंथी महासभा के द्वारा डिग्री प्रदान की गई। ज्ञानशाला प्रशिक्षक परियोजना के अन्तर्गत 'विज्ञ' और 'विशारद' के बाद सन् 2004-2008 के मध्य बनने वाले स्नातक प्रशिक्षक अपने गुरु के सम्मुख डिग्री स्वीकार कर गौरव की अनुभूति कर रहे थे।

- इस अवसर पर मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में फरमाया कि ज्ञानशाला ऐसा उपक्रम है, जहां नई पीढ़ी में संस्कारों के निर्माण का प्रयास किया जाता है। इसमें योगभूत बनने वाले निर्जरा के भागीदार होते हैं।

- परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने उद्बोधन में ज्ञानशाला को ज्ञान के विकास व संस्कार-निर्माण की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण उपक्रम बताया। आचार्यप्रवर ने ज्ञानशाला के संदर्भ में पूज्य गुरुदेव तुलसी का स्मरण करते हुए फरमाया कि तेरापंथ समाज को ज्ञानशाला के रूप में काफी व्यवस्थित व सुन्दर नेटवर्क प्राप्त है। बालपीढ़ी विकास का यह रचनात्मक उपक्रम है। महासभा ने प्रारम्भ से इसे संभाला, पोषण दिया और आगे बढ़ाने का प्रयास किया है।

- अहमदाबाद की प्रशिक्षिका बहनों के मंगल संगान से समारोह का प्रारंभ हुआ। ज्ञानशाला के राष्ट्रीय संयोजक श्री सोहनराज चोपड़ा ने जानकारी देते हुए बताया-पूरे देश में प्रारूप के आधार पर संचालित होने वाली 372 ज्ञानशालाएं पंजीकृत हैं। प्राप्त जानकारी के अनुसार प्रशिक्षकों की कुल संख्या 4,700 है, जिसमें लगभग 2,300 प्रशिक्षक सक्रिय रूप से अपनी सेवाएं दे रहे हैं और लगभग 14,000 ज्ञानार्थी लाभान्वित हो रहे हैं। मुनि उदितकुमारजी की प्रभावी प्रेरणा संभागियों को ऊर्जा प्रदान कर रही थी। कार्यक्रम का सफल संचालन प्रो. रत्ना कोठारी ने किया।

★ ज्ञानशाला प्रशिक्षक सम्मेलन - लाडनूं

'ज्ञान से होता प्रकाश' जागता अभिनव विश्वास — "ज्ञानशाला महासभा के तत्वावधान में एक सुन्दर विंग है। इस कार्य को संपोषण व महत्त्व मिलना चाहिए। यह कार्य निर्बाध रूप से चले, ऐसा प्रयास रहना चाहिए। समाज को इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि क्षेत्र में ज्ञानशाला चलती है या नहीं? अगर नहीं चलती है तो उसके संचालन का समुचित प्रयास होना चाहिए। इस कार्य से जुड़े प्रशिक्षक-प्रशिक्षिकाएं बच्चों में ज्ञान, आचार-विचार, संस्कार व व्यवहार के प्रशिक्षण के रूप में एक पवित्र सेवा कार्य कर रहे हैं, ऐसा कहा जा सकता है। ज्ञानशाला का यह उपक्रम पवित्रता की दिशा में गति करता रहे, यह शुभाशंसा।" - आचार्य महाश्रमण

- दिनांक 15 अगस्त, राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम बार जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा द्विदिवसीय ज्ञानशाला प्रशिक्षक सम्मेलन का गुरु सन्निधि में सफल आयोजन हुआ। प्रातःकालीन कार्यक्रम में दिल्ली की प्रशिक्षिका बहनों ने गीत का संगान किया। महासभा के

अंतर्गत ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के राष्ट्रीय संयोजक श्री सोहनराज चोपड़ा ने अपने वक्तव्य में ज्ञानशाला के अंतर्गत चल रही विभिन्न गतिविधियों की जानकारी दी।

- मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में फरमाया कि जो धार्मिक प्रशिक्षण लेता है, वह संयमित जीवनशैली वाला होता है। धार्मिक परिवेश देने के लिए जो अभिभावक बच्चों को ज्ञानशालाओं में नहीं भेजते, वे अपने एक प्रमुख दायित्व से वंचित रहते हैं। संस्कारों की दृष्टि से अभिभावक अपने बच्चों के प्रति जागरूक रहें, यह अपेक्षा है।
- परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने '**ज्ञान से होता है प्रकाश**' विषय पर अपना उद्‌बोधन प्रदान करते हुए फरमाया कि ज्ञान के दो विभाग हैं लौकिक व लोकोत्तर। भूगोल-खगोल, गणित, विज्ञान आदि लौकिक विद्याओं का अपना महत्त्व है। दूसरी है लोकोत्तर अध्यात्म विद्या, जो मोक्ष की ओर ले जाने वाली और जीवन को पवित्र बनाने वाली है।धार्मिक-आध्यात्मिक संस्कारों को पुष्ट करने वाली विद्या को ग्रहण करने का प्रयत्न नहीं होता, वहां भावी पीढ़ी उत्पथगामी हो सकती है। प्रशिक्षण का अपना महत्त्व होता है, उसका प्रभाव भी होता है।
- कार्यक्रम में साध्वी ऋजुयशाजी ने गीत का संगान किया। मुमुक्षु विवेक ने दीक्षा-आदेश प्रदान करने के लिए पूज्यप्रवर के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि कुमारश्रमणजी ने किया।
- पहली बार राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित होने वाले द्विदिवसीय ज्ञानशाला प्रशिक्षक सम्मेलन के विभिन्न सत्रों में मुनि उदितकुमारजी, मुनि हिमांशुकुमारजी, समणी मल्लिप्रज्ञाजी, ज्ञानशाला के राष्ट्रीय प्रशिक्षक श्री डालमचन्द नौलखा, प्रो. रत्ना कोठारी, श्री बजरंग जैन एवं श्री सोहनराज चौपड़ा ने प्रशिक्षण दिया। ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के पूर्व नियोजक श्री अशोकभाई संघवी का सम्मान किया गया। मुम्बई, चैन्नई, हैदराबाद क्षेत्र की प्रशिक्षिकाओं ने गीत प्रस्तुत किया। उनके द्वारा निकाली गई रैली भी आकर्षक रही। सम्मेलन के संयोजक श्री महेन्द्र कोचर ने आभार ज्ञापित किया। **इस सम्मेलन में ज्ञानशाला के 22 अंचलों में से 21 अंचलों से 332 प्रशिक्षक-प्रशिक्षिकाओं ने भाग लिया।**

★ मेधावी छात्र प्रोत्साहन परियोजना

''मेधा सम्पन्न किशोरावास्था - सोने में सुगन्ध वाली बात है'' आचार्य महाश्रमण

गुरु सन्निधि में हुआ मेधा का बहुमान-विशेष प्रोत्साहन समारोह हुआ गतिमान — दिनांक 25 अगस्त 2013, तेरापंथी महासभा के एक प्रकल्प **मेधावी छात्र प्रोत्साहन परियोजना** के अंतर्गत उपस्थित मेधावी छात्र-छात्राओं की ओर उन्मुख होकर आचार्यप्रवर ने फरमाया कि मेधावी छात्र-छात्रायें समय प्रबंधन की बात को आत्मसात् करें। समय को व्यर्थ न कर उसे सार्थक बनाने का प्रयास करना चाहिए। यह किशोरावस्था का समय बहुत मूल्यवान है। ज्ञान व संस्कार की दृष्टि से यह समय प्रगति का है।

- गुरुवर ने प्रेरणा दी कि महासभा मेधावी छात्र प्रोत्साहन परियोजना चला रही है। इसके अंतर्गत आने वाले छात्र-छात्राओं में अच्छे संस्कार आएं, अच्छी जीवनशैली बने। यह परियोजना इसलिए उपयोगी है, क्योंकि इसके माध्यम से धर्म के निकट आने का क्रम बनता है। आचार्यप्रवर के प्रभावक प्रवचन से पूर्व मंत्री मुनिश्री का प्रेरक वक्तव्य हुआ।
- **जिनके उपयोगी प्रशिक्षण ने योजना को बनाया और भी प्रभावी** - महासभा के अन्तर्गत गतिशील मेधावी छात्र प्रोत्साहन परियोजना के अन्तर्गत संचालित दो दिनों में विभिन्न कार्यशालाओं और संगोष्ठियों में शासनश्री मुनि किशनलालजी, जैविभा संस्थान की कुलपति समणी चारित्रप्रज्ञाजी, आईआईटी रुड़की के प्रो. नवनीत अरोड़ा, आईआईटी विशेषज्ञ सुपर-30 के संचालक श्री आनंदकुमार (पटना) एवं नम्रता गांधी ने प्रशिक्षण दिया।
- आचार्यप्रवर ने बच्चों को प्रेरणा देते हुए विविध संकल्प करवाए। आचार्यप्रवर की निकट सेवा प्राप्त कर मेधावी छात्र-छात्रायें अभिभूत थे। अमृतायन में प्रवासित महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी एवं मुख्यनियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी ने बच्चों को वात्सल्य मिश्रित प्रेरणा प्रदान की।
- इस परियोजना की पूर्व मेधावी छात्रा रही साध्वी मंजुलयशाजी ने भी अपने विचार रखे। इस अवसर पर आधा मिनट परिचय प्रतियोगिता का आयोजन विशेष आकर्षण का हेतु बना।

★ **सम्मान समारोह —** पूज्य आचार्यप्रवर की पावन सन्निधि में आयोजित सम्मान समारोह में अंकों के आधार पर चयनित इक्कीस मेधावी छात्र-छात्राओं को '**गणाधिपति गुरुदेव तुलसी स्वर्णपदक**', अठारह को '**आचार्य महाप्रज्ञ स्वर्णपदक**', चालीस को '**आचार्य महाश्रमण स्वर्णपदक**' चवालीस को '**महासभा रजतपदक**' प्रदान कर सम्मानित किया गया।

- महासभा अध्यक्ष श्री हीरालाल मालू, उपाध्यक्ष श्री विमल सुराणा, प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र घोषल, स्थानीय सभा के अध्यक्ष श्री भंवरलाल खटेड़ ने पारितोषिक प्रदान किये। परियोजना के सदस्य सचिव श्री हरीश जैन, श्री प्रदीप संचेती,

नम्रता जैन, मनीषा राखेचा ने विभिन्न सत्रों का संचालन किया। मुनि दिनेशकुमारजी ने विद्यार्थियों को अभिनव सामायिक का प्रयोग करवाया।

- सम्मेलन में 231 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। लगभग इतने ही अभिभावक भी साथ आये। मेधावी छात्र-छात्राओं में स्मृति कोठारी (गदग-कर्नाटक) के. ए. एंड आर. में बी. इ. टॉपर, सुश्री डोली बोथरा (दिल्ली) जीजीएसयू से एमबीए में टॉपर रही। वैभव भंसाली सक्वैश गेम में राष्ट्रीय स्तर पर द्वितीय रहे। **निरन्तर विकासरत इन मेधावी विद्यार्थियों के सौभाग्य पर अंकित उपलब्धियों के आलेख एक गौरवशाली भविष्य का संकेत दे रहे थे।**

★ आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी अभिप्रेरणा समारोह — कोलकाता-दक्षिण हावड़ा

कोलकाता तेरापंथ धर्मसंघ का गढ़ है। यहां के श्रावकों का तेरापंथ धर्मसंघ के विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा है इसे मद्देनजर रखते हुये साध्वीश्री अणिमाश्रीजी एवं साध्वीश्री मंगलप्रज्ञाजी की सन्निधि में दक्षिण हावड़ा प्रवचन सभागार में '**आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी अभिप्रेरणा समारोह**' समायोजित हुआ। इस कार्यक्रम में महासभा के अध्यक्ष श्री हीरालाल मालू, प्रधान न्यासी श्री कमल कुमार दुगड़, उपाध्यक्ष श्री विनोद बैद, कोषाध्यक्ष श्री सुरेन्द्र बोरड़ आदि अनेक गणमान्य व्यक्तियों के साथ हजारों तुलसी भक्त उपस्थित थे।

- साध्वीश्री अणिमाश्रीजी ने अपने पावन उद्बोधन में फरमाया कि अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री तुलसी एक ऐसे महापुरुष थे जिन्होंने समुदाय के घेरे से ऊपर उठकर मानव मात्र के हित का संरक्षण करते हुये जैन धर्म को जन धर्म बनाने का अथक प्रयास किया। उनके द्वारा संचालित अणुव्रत आंदोलन नैतिक चेतना के जागरण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है। कोलकाता महानगर का श्रावक समाज गुरु दृष्टि के अनुरूप आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी मनाने की तैयारी करे ऐसी अभिप्रेरणा प्रदान की गयी।
- साध्वीश्री मंगलप्रज्ञाजी ने आचार्य श्री तुलसी को इस सदी का अद्भुत, विशिष्ट श्लाकापुरुष बताते हुये कहा कि आज पूरा धर्मसंघ गुरु तुलसी की जन्म शताब्दी को सुनियोजित ढ़ंग से मनाने की तैयारी कर रहा है। हम बड़े सौभाग्यशाली हैं कि तुलसी की पहली जन्म शताब्दी मनाने का गौरव हमें प्राप्त हो रहा है।
- इसी क्रम में महासभा अध्यक्ष श्री हीरालाल मालू ने आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष के कार्यक्रमों की विस्तार से अवगति देते हुए कोलकाता समाज से इस महायज्ञ में तन, मन व धन से जुड़ने का आह्वान किया। महासभा के प्रधान न्यासी श्री कमल कुमार दुगड़ ने इस महत्वपूर्ण अवसर पर शासकीय सहयोग से होने वाले कार्यक्रमों की अवगति प्रदान की।
- इस अवसर पर दक्षिण हावड़ा सभाध्यक्ष श्री मालचन्द भंसाली ने अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का कुशल संचालन महासभा के उपाध्यक्ष श्री विनोद बैद ने किया। समारोह में नव संकल्प व नव उन्मेष जन-जन के मुख मंडल पर परिलक्षित हो रहा था।

★ दक्षिणांचल सम्मेलन — बेंगलोर

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष की पूर्व तैयारी के साथ जन जागरणा में एकजुट हुआ दक्षिण का श्रावक-श्राविका समाज

22 सितम्बर 2013 : अभ्यागत के स्वागताभिनन्दन में 'म्हारा आज फल्या अरमान' के मंगल स्वरों के साथ प्रारम्भ हुआ दक्षिणांचल सम्मेलन जिसमें उत्साह से सरोबार स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल व स्थानीय युवक परिषद् के सम्मिलित भावों ने प्रत्येक प्रतिनिधि को अपनत्व के अहसास में सरोबार कर दिया। पूरे देश से समागत महासभा व केन्द्रीय सभाओं के 100 से अधिक पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं के साथ दक्षिण से लगभग 200 प्रतिनिधियों ने इस सम्मेलन में सहभागिता की जो आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी के प्रति दक्षिण के श्रावक समाज के उत्साह को दर्शाता है।

- आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह की पूर्व तैयारी हेतु आयोजित इस सम्मेलन का शुभारम्भ गांधीनगर तेरापंथ भवन में **साध्वीश्री कुन्थुश्रीजी** के सान्निध्य में हुआ। सम्मेलन की अध्यक्षता जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा-अध्यक्ष, आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह समिति-संयोजक श्री हीरालाल मालू ने की, मुख्य अतिथि जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा प्रमुख न्यासी, महासभा शताब्दी वर्ष-संयोजक श्री कमल कुमार दुगड़, विशिष्ट अतिथि अणुव्रत महासमिति अध्यक्ष श्री बाबूलाल गोलछा एवं तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संजय धारीवाल की गरिमामयी उपस्थिति थी।
- इस सम्मेलन में कोलकाता, सोलापुर, चित्रदुर्गा, हैदराबाद, ईरोड़, हिरीयूर, हुबली, त्रिपुर, गुड़ियात्तम, कोप्पल, मदुरै, गदग, मिंजूर, चैन्नेगेरै, होसकोटे, बल्लारी, तिरवत्यूर, कोयम्बटूर, चिकमंगलूर, मण्डया, मैसूर, गुलबर्गा, होसूर, चैन्नई की तण्डियार पेट, साहुकार पेट, त्रिपलीकेन एवं बेंगलोर की गांधीनगर, विजयनगर, यशवंतपुर, आडगुड़ी, राजाजीनगर सभाओं के सभी संगठनमूलक व प्रवृत्तिमूलक संस्थाओं के प्रतिनिधियों की सक्रिय सहभागिता ने सम्मेलन की उपयोगिता को वर्धापित किया।

- साध्वीश्री कंचनरेखाजी, साध्वीश्री सुमंगलाश्रीजी, साध्वीश्री सुलभयशाजी ने तुलसी अष्टकम् के मंगलमय संगान व उसके पवित्र परमाणुओं से पूरे परिसर को तुलसीमय बना दिया।
- महासभा गीत की विडियों ऑडियो सीडी के माध्यम से सशक्त प्रस्तुति से सभी समागत प्रतिनिधिगण संघीय गौरव से अभिभूत हो उठे। पूरी सभा '**हमारे भाग्य बड़े बलवान, मिला यह तेरापंथ महान्**' के ओज पूर्ण स्वरों से गुंजायमान हो उठा।
- स्थानीय सभाध्यक्ष श्री गौतमचन्द कोठारी ने स्वागत भावों के साथ आचार्य तुलसी के प्रति जागते संकल्पों का भी अभिनन्दन किया।
- सम्मेलन के संयोजक श्री दीपचन्द नाहर ने सम्मेलन के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह के शुभारम्भ से पूर्व जन चेतना को झंकृत कर श्रद्धा और भक्ति के सैलाब को गंगोत्री के आकार में प्रतिष्ठित करना एवं आचार्य तुलसी के बहुआयामी अवदानों को जन-जन तक पहुंचाना है।
- **इस विशाल समारोह में जे. पी. जयप्रभविजयजी महाराज ने आचार्य तुलसी के विराट व्यक्तित्व को अपने प्रखर विचारों से वर्धापित करते हुए फरमाया कि तुलसी न जन्म और न मृत्यु को प्राप्त हुये, वे तो जीवन्त है। तुलसी को हृदय में बसाना संस्कृति को आगे बढ़ाना है। अनुशासन और अणुव्रत के दो महान् व्यवस्थाओं के कानून तुलसी ने दिये जो जिन शासन की सफलता का आधार है। साधना और सिद्धि की ऊंचाई व्यक्ति को महान् बनाती है। तुलसी साधना की सिद्धि से सम्पन्न पारदर्शी चिन्तन, ध्यान की अपूर्व शान्ति से सम्पन्न व्यक्तित्व थे। उन्होंने अपने विशाल व पवित्र आभावलय से बड़े-बड़े राजनीतिज्ञों से सम्पर्क के साथ लोगों में Powerful Thought, Peace, Preksha Meditation & Strong Political Ground तैयार किया। समण संस्कृति उनके अवदानों से समृद्ध हुई। उन्होंने दक्षिणांचल सम्मेलन की सफलता की शुभकामना अभिव्यक्त की।**
- तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संजय धारीवाल ने इस **शताब्दी समारोह में प्रबुद्ध व्यक्तियों की भूमिका पर प्रकाश डालते** हुए कहा कि आचार्य तुलसी दूर दृष्टा दृष्टि सम्पन्न मैनेजमेंट गुरु के रूप में प्रतिष्ठापित व्यक्ति थे। हमें उनके अनुयायी के रूप में तेरापंथ के ब्रांड के साथ उनकी चारित्रिक विशेषताओं व अवदानों को आगे बढ़ाना चाहिये।
- साध्वीश्री प्रियदर्शनाजी 'प्रियदा' की सहवर्ती **साध्वीश्री विचक्षणश्रीजी** ने **राष्ट्रीय चरित्र में नैतिक मूल्यों के प्रतिष्ठापक आचार्य तुलसी विषय पर** अपनी विचाराभिव्यक्ति में श्री तुलसी को जिन शासन के चमकते सितारे बताते हुए विश्व बंधुत्व के उनके मिशन को महत्वपूर्ण बताया। राष्ट्रीय चरित्र निर्माण में 'अणुव्रत' को नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा का सशक्त आधार बताया।
- अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष श्री बाबूलाल गोलछा ने अणुव्रत संकल्प यात्रा के क्रियान्वयन की दिशा में मार्ग प्रशस्त करते हुए कहा कि संकल्प वही व्यक्ति ले जो इन्हें समझे व इन्हें जीवन में दृढ़ता से लागू कर सके। कार्यकर्ता भी इस ओर सजग रहे। उन्होंने इस अवसर पर अणुव्रत समिति गदग के गठन की घोषणा भी की।
- अणुव्रत समिति, बेंगलोर के अध्यक्ष श्री प्रकाश लोढ़ा ने समिति द्वारा 9,000 संकलित अणुव्रत संकल्प पत्र महासभा प्रधान न्यासी श्री कमल कुमार दुगड़ को भेंट कर अपनी टीम के कर्तृत्व को उजागर किया।
- कार्यक्रम को मोड़ देते हुए सुश्री सोनल व हेमलता पीपाड़ा ने महिमा तुलसी की संगीतमय प्रस्तुति कर समारोह को गति प्रदान की।
- समणी मन्जूप्रज्ञाजी ने इस विशिष्ट समारोह में आचार्य तुलसी को भारतीय संस्कृति के संवाहक, व्यक्तित्व निर्माण के पुरोधा व धर्म के पुष्प खिलाने वाले माली के रूप में व्याख्यायित किया एवं मानवता के विकास के स्वप्न दृष्टा को अपनी श्रद्धा समर्पित की।
- महासभाध्यक्ष व आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह समिति के संयोजक श्री हीरालाल मालू ने समागत प्रतिनिधियों से आह्वान किया कि **यह वर्ष व्यक्तित्व निर्माण के हार्द के साथ आयोजित किया जा रहा है जिसके दो महत्वपूर्ण माध्यम बनेंगे - महाव्रत और अणुव्रत**। जिसके लिये बिना प्रमाद किये पूर्ण जोश के साथ आगे बढ़ने का आगाज किया। आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह की कार्यक्रम प्रगति एवं उसकी प्रभावक परियोजनाओं पर प्रकाश डालते हुए रथ यात्रा, 100 दीक्षाओं, साहित्य अनुवाद, स्मृति ग्रन्थ, बुद्धिजीवी विचार मंच, अणुव्रत के 1,00,000 अणुव्रती, गीत गायन एवं ऐनीमेशन फिल्म आदि कुछ महत्वपूर्ण कार्यक्रमों के प्रति प्रतिनिधियों का ध्यानाकार्षण किया एवं 5 नवम्बर 2013 को लाडनूं में तेरापंथ की भव्य दीपावली अर्थात् इस समारोह के शुभारम्भ के अवसर पर आचार्य महाश्रमणजी की पुनीत सन्निधि में पहुंचने का अनुरोध संभागी भाई-बहिनों से किया।
- सम्मेलन के मुख्य अतिथि संघ सेवी महासभा के प्रमुख न्यासी एवं महासभा शताब्दी वर्ष के संयोजक श्री कमल कुमार दुगड़ ने दक्षिण की धरा पर '**आचार्य तुलसी हमारा दायित्व**' विषय पर अपने प्रमोद भावना पूर्ण आत्मीय भावों की प्रस्तुति करते हुए संघ

के लिए सर्वात्मना समर्पित दक्षिण के कर्मठ संघसेवियों का पुण्य स्मरण किया। उन्होंने तेरापंथ की गौरवशाली परम्पराओं एवं स्वर्णिम इतिहास का उल्लेख करते हुए कार्यकर्ता के महत्व एवं संगठन शक्ति की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने आत्म जागृति के लिए आचार्य तुलसी के उद्घोषों को पूरे देश में होर्डिंग्स के रूप में लगाने का सुझाव दिया एवं अणुव्रत के माध्यम से धर्म की शक्ति को विस्तारित करने की गुहार लगाई।

- सम्मेलन प्रायोजक श्री मूलचन्द नाहर ने अपने परिवार के सहयोग से धर्मसंघ की अनवरत सेवा करने की भावना रखी।
- **साध्वीश्री कुन्थुश्री ने श्रद्धासिक्त सभा को उद्बोधित करते हुए फरमाया कि अनुपमेय श्री तुलसी, तुलसी जैसे थे।** आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी को आध्यात्मिक शताब्दी बताते हुए आचार्य तुलसी को मानव विकास का संवाहक बताया। उन्होंने प्रभावशाली व्यक्तित्व की विश्व स्तरीय प्रभावकता को और अधिक जीवंत बनाने के लिए तैयार श्रद्धालु व समर्थ कार्यकर्ताओं की एक लम्बी कतार का जिक्र किया।
- महासभा सहमंत्री श्री भूपेन्द्र कुमार मूथा के सुन्दर शब्द संयोजना से सुसज्जित प्रभावी संचालन व तेरापंथ सभा गांधीनगर ट्रस्ट के प्रमुख न्यासी श्री अमृतलाल भंसाली व सभा मंत्री श्री कमल सिंह दुगड़ के आभाराभिव्यक्ति के साथ कार्यक्रम सानन्द सम्पन्न हुआ।

★ **द्वितीय सत्र —** सम्मेलन का द्वितीय सत्र महत्वपूर्ण सम्बद्ध विषयों पर विचारों के आदान-प्रदान के साथ शुरू हुआ। समूह परिचर्चा के इस सत्र के प्रारम्भ में प्रेक्षा संगीत सुधा के मुख्य गायक श्री अशोक सुराणा के मंगलाचरण की भक्ति भरी प्रस्तुति हुयी। इस सत्र में निम्न 8 विषयों पर सामूहिक चर्चा एवं निर्णय के लिए संभागियों को 8 वर्गों में बांटा गया।

	विषय	वर्ग प्रमुख
1.	अणुव्रत संकल्प यात्रा में सदस्यता अभियान	श्री निर्मल रांका, कोयम्बटूर श्री प्रकाश लोढ़ा, बेंगलोर
2.	अणुव्रत संकल्प यात्रा की पूर्व संध्या पर विराट दक्षिणाचंल धम्म जागरण	श्री अभयराज कोठारी, बेंगलोर श्री प्रकाश भंडारी, हैदराबाद
3.	दक्षिणांचल संकल्प यात्रा	श्री राजेश चावत, बेंगलोर श्री करणीसिंह बरड़िया, हैदराबाद
4.	शताब्दी वर्ष में दक्षिण में स्थाई परियोजना	श्री अमृतलाल भंसाली, बेंगलोर श्री प्रसन्नचन्द भंडारी, हैदराबाद
5.	शताब्दी वर्ष में जैन एवं जैनेत्तर वर्गों की सहभागिता	श्री धर्मचन्द लूंकड़, चैन्नई श्री जयप्रकाश गादिया, चिकमंगलूर श्री गौतमचन्द मूथा, बेंगलोर
6.	दक्षिणांचल संगीत प्रतियोगिता	श्री मदनराज रायसोनी, बेंगलोर श्री अमरचन्द लूंकड़, चैन्नई श्री उम्मेद भंडारी, हैदराबाद
7.	विश्वविद्यालयों में तुलसी व्याख्यान माला	श्री संजय धारीवाल, बेंगलोर श्री गौतम सेठिया, चैन्नई श्रीमती वीणा बैद, बेंगलोर
8.	आचार्य श्री महाश्रमणजी की दक्षिण यात्रा	श्री सोहनलाल मांडोत, बेंगलोर श्री मूलचन्द नाहर, बेंगलोर श्री गौतम कोठारी, बेंगलोर

- इस सत्र का पद्य बद्ध संचालन श्री सुभाष डागा ने किया एवं धन्यवाद विजयनगर सभाध्यक्ष श्री शोभाचन्द दुगड़ ने ज्ञापित किया।

★ **तृतीय सत्र - रथ यात्रा एवं शताब्दी वर्ष समारोह पर खुली चर्चा —** इस सत्र का शुभारम्भ तेरापंथ संगान विजेता श्री मनीष पगारिया के सुमधुर भक्ति संगान से हुआ। दक्षिणांचल रथ यात्रा के सह संयोजक श्री राजेश चावत ने पॉवरपोईन्ट के माध्यम से दक्षिण एवं पूरे भारत में चारों दिशाओं से प्रारम्भ अणुव्रत संकल्प रथ यात्रा की विस्तृत जानकारी सदन के समक्ष रखी। साथ ही जानकारी दी कि इस रथ यात्रा के राष्ट्रीय संयोजक दिल्ली निवासी श्री संजय खटेड़ तथा दक्षिणांचल संयोजक श्री दीपचन्द नाहर को नियुक्त किया गया है।

- इस सत्र के संचालक श्री महेन्द्र दक ने अपने जोशीले अंदाज में रथ यात्रा एवं शताब्दी समारोह के आयोजन हेतु संभागी सदस्यों को सुझाव एवं जिज्ञासा के लिए आमंत्रित किया। जिनमें श्री प्रसन्नचन्द भंडारी-हैदराबाद, श्री करणीसिंह बरड़िया-हैदराबाद, श्री पारसमल-हुबली, श्री जयप्रकाश गादिया-चिकमंगलूर, श्री निर्मल रांका-कोयम्बटूर, श्री मदन मारू-मैसूर, श्री विमल कटारिया-बेंगलोर, श्री हेमन्त कोठारी-बेंगलोर, श्री मानमल सुराणा-बेंगलोर, श्री सवाईलाल पोखरणा-फतेहनगर, श्री प्रकाश डोसी-बेंगलोर इत्यादि संभागियों ने अपने सुझाव एवं जिज्ञासायें प्रस्तुत की। संभागियों की जिज्ञासाओं का समाधान महासभा सहमंत्री श्री भूपेन्द्र कुमार मूथा व अणुव्रत संकल्प यात्रा दक्षिण के संयोजक श्री दीपचन्द नाहर ने किया। श्री दीपचन्द नाहर ने बताया इस यात्रा के प्रायोजक श्री नरपतसिंह चोरड़िया परिवार की भावना को ध्यान में रखते हुए इसका शुभारम्भ 1 दिसम्बर 2013 को बेंगलोर से ही किये जाने का निश्चय किया है। यात्रा में हर समय दो समणीवृंद एवं विभिन्न संस्थाओं के 10 कार्यकर्ता साथ में रहेंगे। इस हेतु स्थानीय स्तर के कार्यकर्ताओं से सहयोग की अपील भी की गयी।
- इस सत्र में राजाजीनगर सभाध्यक्ष श्री सुखलाल पीतलिया ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

★ **समाधान सत्र —** इस सत्र का शुभारम्भ युवा गायक श्री विनय दक के मंगलाचरण से हुआ। समूह चर्चा के निर्धारित विषयों पर समूह में विस्तृत चर्चा के पश्चात् जो महत्वपूर्ण उर्वर चिंतन उभर कर आये उनकी सदन के समक्ष प्रस्तुति समूह के वर्ग प्रमुख ने दी एवं उसकी लिखित प्रतिलिपि भी संयोजक महोदय को प्रदान की गयी, जिसे सुनने हेतु पूरी परिषद् लालायित थी।

- समाधान एवं निष्पत्ति के स्वरों के साथ महासभाध्यक्ष श्री हीरालाल मालू ने शताब्दी वर्ष समारोह की परिकल्पना से लेकर अब तक की तैयारी की जानकारी प्रस्तुत करते हुए आगामी एक वर्ष के ऐतिहासिक आयोजन हेतु प्राप्त सहयोग के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुये सम्पूर्ण समाज से हर प्रकार के सहयोग के लिए निवेदन किया। पूरे भारत के कार्यकर्ता एवं समाज से प्राप्त सहयोग की मुक्तकंठ से सराहना करते हुये सभी कार्य पूज्यवरों की दृष्टि के अनुरूप सम्पन्न करने का संकल्प दोहराया।
- महासभा न्यासी श्री पन्नालाल बैद ने भी अपने समीचीन विचार सम्मेलन में प्रस्तुत किये।
- इस सत्र का कुशल संचालन श्रीमती वीणा बैद ने किया।

★ **समापन सत्र —** महासभा महामंत्री श्री बिनोद कुमार चोरड़िया ने महासभा द्वारा सम्पादित विभिन्न योजनाओं की जानकारी प्रस्तुत की।

- महासभा सहमंत्री श्री भूपेन्द्र कुमार मूथा ने इस सम्मेलन की निष्पत्ति परक सम्पन्नता पर प्रसन्नता प्रकट करते हुए सभी के प्रति आभार प्रकट किया। सम्मेलन के संयोजक श्री दीपचन्द नाहर ने सम्मेलन की आयोजना हेतु कार्यकर्ताओं द्वारा प्राप्त सहयोग के प्रति आभार प्रकट करते हुए खुशी जाहिर की कि महासभाध्यक्ष के निर्देशानुसार इस सम्मेलन की सफल आयोजना शताब्दी वर्ष का एक शुभ आगाज है। सभी संभागियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।
- अंत में सभी अतिथियों एवं कार्यकर्ताओं का सम्मान किया गया।
- सत्र का सफल संचालन श्री सुशील चोरड़िया ने किया। श्री तूफान मांडोत के नेतृत्व में संघ गान के संगान के साथ सम्मेलन आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी की आशातीत सफलता के विश्वास के साथ सम्पन्न हुआ।

★ उत्तर कर्नाटक एरिया समिति - श्रावक सम्मेलन का सफल समायोजन

संकल्प शक्ति के साथ निष्ठा व कर्तव्य परायणता के पथ पर जागरूक श्रावक समाज का हो निर्माण - साध्वी संगीतश्री

गदग, 25 सितम्बर 2013 : साध्वीश्री संगीतश्रीजी ठाणा 4 के पावन सान्निध्य व महासभाध्यक्ष श्री हीरालाल मालू के प्रमुख आतिथ्य में उत्तरी कर्नाटक एरिया समिति श्रावक सम्मेलन अत्यधिक उत्साहमय वातावरण में सम्पन्न हुआ।

- समारोह के मुख्य अतिथि महासभाध्यक्ष श्री हीरालाल मालू ने पारिवारिक सौहार्द एवं समन्वय के बारे में विस्तार से अपने विचार प्रस्तुत करते हुए श्रावक समाज द्वारा करणीय कार्यों को प्रस्तुत किया। साध्वीश्री संगीतश्रीजी ने अपने महत्वपूर्ण उद्बोधन में संघ विकास में श्रद्धा, आस्था, समर्पण की त्रिवेणी में आत्मसात् होने की प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि निष्ठा व कर्तव्य परायणता के प्रति श्रावक समाज हमेशा जागरूक रहे। प्रथम सत्र का संचालन श्री सुरेश कोठारी व आभार ज्ञापन श्री रतन सकलेचा ने किया।
- महिला मंडल व कन्या मंडल के संयुक्त स्वरों में मंगलाचरण की श्रद्धामय प्रस्तुति के साथ प्रारम्भ हुये कार्यक्रम में सभाध्यक्ष व कार्यक्रम प्रायोजक श्री सूरजमल जीरावाला ने स्वागत में अपने विचारों की प्रस्तुति दी। सभा मंत्री श्री अमृतलाल कोठारी ने अतिथि परिचय प्रस्तुत करते हुए कार्यक्रम की प्रस्तावना को प्रस्तुत किया। श्री रावतमल गोठी, साध्वीश्री मुदिताश्रीजी, श्री अभयराज कोठारी, साध्वीश्री शान्तिप्रभाजी व साध्वीश्री कमलविभाजी ने अपने विचारों को प्रस्तुत करते हुए श्रावक की अर्हताओं को प्रस्तुत किया। समारोह के विशिष्ट अतिथि श्री भूपेन्द्र कुमार मूथा ने विस्तार से अपने विचार प्रस्तुत करते हुए संगठन, समर्पण व दायित्व निर्वहन के प्रति जागरूकता के प्रति श्रावक समाज को अवगत करवाया।

- श्रावक सम्मेलन के द्वितीय सत्र का प्रारम्भ युवक परिषद् के सदस्यों द्वारा प्रस्तुत समवेत स्वरों से हुआ। श्री गौतम चोपड़ा द्वारा स्वागतोभिव्यक्ति के पश्चात् साध्वीश्री शान्तिप्रभाजी ने निर्धारित विषय को प्रतिपादित किया। श्री भूपेन्द्र कुमार मूथा ने आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष की कार्य योजना को प्रस्तुत करते हुए श्रावक समाज की सहभागिता की चर्चा की। साध्वीश्री कमलविभाजी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए बताया कि समस्या से वही व्यक्ति मुक्त हो सकता है जो उसका सामना करना जानता हो। श्री हीरालाल मालू ने विस्तार से आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष की परियोजना, क्रियान्वयन की दिशा में प्रगति, यात्राओं के अनुभव प्रस्तुत करते हुए परिषद् को भाव विभोर कर दिया।
- साध्वीश्री संगीतश्रीजी ने अनेक क्षेत्रों व कार्यकर्ताओं की श्रद्धा भक्ति का उल्लेख करते हुए गीत के स्वरों को मुखरित किया। श्री सुरेश कोठारी व श्री रतन संकलेचा ने सुंदर संचालन किया व श्री रोहित सालेचा ने आभार प्रकट किया। श्रावक सम्मेलन में 24 क्षेत्रों के लगभग 200 कार्यकर्ता उपस्थित थे। संघ गान के साथ उपलब्धियों भरा श्रावक सम्मेलन सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर महासभा कार्यकारिणी सदस्य श्री माणकचन्द मूथा, एरिया समिति के अध्यक्ष श्री केवलचन्द बाफना विशेष रूप से उपस्थित थे।

★ विशेष ध्यानार्थ

राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय तेरापंथ परिवार निर्देशिका प्रकाशन

आपको सूचित करते हुए प्रसन्नता हो रही है कि जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष एवं महासभा शताब्दी वर्ष के अवसर पर राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय तेरापंथ परिवार निर्देशिका का प्रकाशन किया जा रहा है। इसमें देश-विदेश में प्रवासित समस्त तेरापंथी परिवारों का समावेश किया जायेगा।

- महासभा द्वारा अपनी सभी संलग्न सभाओं को उनके क्षेत्र के तेरापंथी परिवारों की सूचि संलग्न के साथ पत्र प्रेषित किया जा रहा है। कृपया इस सूचि को अपेक्षानुसार संशोधित करके 15 दिनों के अन्दर महासभा कार्यालय, कोलकाता के पते पर भिजवायें। महासभा की बेवसाइट **www.jstmahasabha.org** पर **Online Update Form** भी भरा जा सकता है अथवा महासभा के ई-मेल **info@jstmahasabha.org** पर भी संशोधित विवरण प्रेषित किया जा सकता है। **Internet** की सुविधा नहीं होने की स्थिति में संलग्न फॉर्म को भरकर भिजवाने से भी सम्बन्धित परिवार का विवरण निर्देशिका में संकलित किया जा सकेगा।
- आपसे निवेदन है कि सभा के सभी सदस्यों को बुलाकर इस कार्य से उन्हें अवगत करवायें व इसे गति प्रदान करें। पत्र के साथ निर्देशिका प्रकाशन सम्बन्धित पोस्टर भी संलग्न किया जा रहा है। इसे आप यथोचित स्थान पर लगायें ताकि अधिक से अधिक लोगों को जानकारी प्राप्त हो सके।
- ध्यातव्य कि निर्देशिका का प्रकाशन विज्ञापन सहयोग से किया जायेगा। विज्ञापन हेतु फॉर्म भी सभाओं को प्रेषित पत्र के साथ संलग्न किया जा रहा है। कृपया आपके क्षेत्र से अधिकाधिक विज्ञापन एकत्रित कर महासभा कार्यालय को भिजवाने की व्यवस्था करें। आवश्यकतानुसार इस फॉर्म का जेराक्स करवाकर भी उपयोग में लिया जा सकता है।
- विशेष जानकारी हेतु निर्देशिका के **संयोजक श्री जतनमल गेलड़ा** से उनके मोबाईल नं. **09433015740** पर संपर्क किया जा सकता है।
- आशा ही नहीं अपितु विश्वास है कि आपका महत्वपूर्ण सहयोग इस ऐतिहासिक कार्य को पूरा करने में मील का पत्थर साबित होगा।

★ **आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह - 5 नवम्बर 2013, लाडनूं-विराट धम्म जागरण —** तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता आचार्य महाश्रमणजी की पुनीत सन्निधि में मानवता के मसीहा आचार्य तुलसी के जन्म शताब्दी वर्ष का शुभारम्भ होने जा रहा है।

उसी दिन रात्रि में लाडनूं में '**तुलसी की अर्चा में विराट धम्म जागरण**' का आयोजन भी किया जा रहा है। बिना वाद्य यंत्रों का प्रयोग किये जो भाई-बहिन तुलसी की भक्ति में अपना गायन प्रस्तुत करने के इच्छुक हैं उन सभी भाई-बहिनों से अनुरोध है कि वो इस विराट धम्म जागरण के संयोजक श्री राकेश खटेड़ से सपर्क स्थापित करें। श्री राकेश खटेड़, Diamond Trend, 84 Wall Tax Road, 2nd Floor, Above SBI, **Chennai - 600003** (Tamilnadu). +91 9380184000 /9840062171

★ **तप जप सूचि —** चातुर्मास काल में तप जप की बहार रहती है। सभी सभाओं से अनुरोध है कि कृपया वो अपने क्षेत्र में हुयी तपस्याओं व जप क्रम का पूर्ण विवरण एक साथ अभ्युदय में प्रकाशनार्थ प्रेषित करें।

महासभा की विभिन्नि प्रवृत्तियों में अनुदान राशि निम्नलिखित अनुदानदाताओं से अथवा उनके सद्प्रयासों से प्राप्त हुयी।

(दिनांक 11 जुलाई 2013 से 10 सितम्बर 2013 तक प्राप्त अनुदान राशि)

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह

11,00,000/–	श्री केवलचन्द महावीरचन्द हुकमीचन्द राठौड़, जाणुन्दा–चेन्नई
11,00,000/–	श्री नेमचन्द चौपड़ा, यमुनानगर
11,00,000/–	श्री उम्मेदमल सिंघवी, जोधपुर
11,00,000/–	श्री सुभाष मदनलाल नाहर, औरंगाबाद
6,00,000/–	श्री भरत सिंघी, हैदराबाद
6,00,000/–	श्री कमलेश भादानी, तिरपुर
4,00,000/–	श्री सुकनराज, संतोष कुमार, राहुल, जिनेश जीरावाला परमार, चेन्नई
2,00,000/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, हुबली
1,01,000/–	श्री लालमन गोयल, कलांवली
1,01,000/–	श्री सूरजमल कमल सिंह सम्पतमल बैद, बीदासर
1,00,000/–	श्री पन्नालाल बरड़िया, श्रीडूंगरगढ़–धुबड़ी
1,00,000/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, धुबड़ी
1,00,000/–	श्री दिनेशचन्द कैलाशचन्द सियाल (श्री मालवा जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, रतलाम)
1,00,000/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, कटक
1,00,000/–	श्रीमती कमला देवी जैन (धर्मपत्नी – स्व. मदनलालजी जैन), गुड़गांव
1,00,000/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सिलीगुड़ी
1,00,000/–	श्री गोपीलाल विजय कुमार सामोता, इन्दौर
1,00,000/–	श्री सुशील कुमार हीरावत, विशाखापटनम्
1,00,000/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, उधना
1,00,000/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, कोकराझाड़
1,00,000/–	श्री अरविन्द कुमार जोधराज जैन (लोढ़ा) इन्दौर–धोइन्दा
1,00,000/–	श्री जतनमल गेलड़ा फाउन्डेशन, कोलकाता
1,00,000/–	श्री सुरेश चन्द जैन, हांसी
1,00,000/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, बोरावड़
1,00,000/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, भीलवाड़ा
1,00,000/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ महिला मंडल, सिलीगुड़ी
1,00,000/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, दुर्ग–भिलाई
1,00,000/–	श्री ज्ञानचन्द बरमेचा, अहिवाड़ा
1,00,000/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, बरपेटा
1,00,000/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, साउथ दिल्ली
1,00,000/–	तेरापंथ महिला मंडल, चिकमंगलूर
1,00,000/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, नान्देशमा
1,00,000/–	श्री हनवन्त राय तुलसी देवी मेहता, जोधपुर
1,00,000/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, नीमच
1,00,000/–	श्री अशोक कुमार विनोद कुमार जैन, हांसी
1,00,000/–	श्री संदीप कुमार प्रदीप कुमार पिपाडा, कल्याणपुरा
1,00,000/–	श्री घीसाराम जैन, मंडीआदमपुर
1,00,000/–	श्री रतनलाल सुरेश कुमार मदनलाल, उचाना मंडी
1,00,000/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, यमुनानगर
1,00,000/–	श्री विनोद गोलछा, यमुनानगर
1,00,000/–	श्री मोतीलाल जीतमल संचेती, यमुनानगर
1,00,000/–	श्री गिरधारीलाल गुप्ता, डोम्बीवली
1,00,000/–	श्री जे. गौतमचन्द सेठिया, ट्रिप्लीकेन
1,00,000/–	श्री शान्तिलाल बावेल, बैंगलोर
1,00,000/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, नोखा
1,00,000/–	श्री पदमचन्द गुजरानी, सिरसा
51,000/–	श्री राजेश कुमार प्रकाश बैंगानी, बीदासर
31,000/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ महिला मंडल, धुबड़ी

आभारी हैं हम आपके

25,000/– श्री नरेन्द्र कुमार दुगड़, रायपुर
21,000/– श्रीमती उमा देवी मालू, इन्दौर
11,000/– श्री विमल कुमार मांडोत, इन्दौर

स्मारक स्थल

51,00,000/– श्री सुभाष, दिपेश, दीपक गोयल, ऐलनाबाद (सिरसा)
18,00,000/–श्री मूलचन्द सुरेन्द्र कुमार बोथरा, बीकानेर
5,00,000/– जेड.के.एल. बियरिंग इन्डिया प्रा. लि.
(श्री सुरेन्द्र कुमार चोरड़िया, श्री चैनरुप चिण्डालिया), कोलकाता
4,11,111/– समर्पण, कोलकाता
1,11,111/– दिल्ली सिरियारी संघ, दिल्ली
1,00,000/– मेसर्स जोडियाक इन्टरप्राइजेज प्रा. लि., जयपुर
45,000/– श्री चंपालाल कुचेरिया, तुरा–ग्वालपाड़ा
40,000/– श्री सोहनलाल विमल कुमार जैन, मालेगांव
5,100/– श्री विजयचन्द सुखानी, फरीदाबाद

मेधावी छात्र प्रोत्साहन परियोजना

1,55,000/– साउथ कलकत्ता श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, कोलकाता
11,000/– शाह फतेहलाल सूरजमल डोसी, उदयपुर

महासभा की विविध गतिविधियों हेतु

7,00,000/– श्री सुमेरमल पटावरी ट्रस्ट, (श्री कन्हैयालाल जैन पटावरी) दिल्ली
3,00,000/– श्री रोशनलाल सांखला, केलवा
1,00,000/– श्री बजरंग कुमार सेठिया, सिलीगुड़ी
11,000/– श्री रतनलाल महेन्द्र कुमार नाहर, कोलकाता
11,000/– श्री हनुमानमल प्रताप सिंह बांठिया, कोलकाता

महासभा शताब्दी वर्ष तेरापंथ भवन निर्माण योजना

20,00,000/–श्री मूलचन्द विकास कुमार मालू, दिल्ली

उत्तराखण्ड बाढ़ आपदा

1,11,000/– श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सूरत
1,00,000/– मेसर्स जोडियाक इन्टरप्राइजेज प्रा. लि., जयपुर
41,000/– श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, बेल्लारी
21,000/– श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सैंथिया
21,000/– श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, फरीदाबाद
21,000/– श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, जगदलपुर
11,000/– श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, जयगांव
13,000/– श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, रायसिंहनगर
11,000/– श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, भागलपुर
11,000/– श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सायरा
11,000/– श्री दयाचन्द अमरनाथ, जैतो
11,000/– श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, हुबली
11,000/– श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, जयसिंगपुर
11,000/– श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, पिंपरी चिन्चवाड़
11,000/– श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, भीलवाड़ा
11,000/– श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, रामपुरा फूल
11,000/– श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, समाना मंडी
7,100/– श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, ग्वालियर
5,100/– बद्रीप्रसाद चम्पालाल सरावगी चैरिटेबल ट्रस्ट, कोलकाता
5,000/– श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, गोवा
5,000/– श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, रमन

सहभागिता योजना

11,00,000/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, मुम्बई
4,50,000/–	साउथ कलकत्ता श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, कोलकाता
2,82,000/–	दक्षिण हावड़ा श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, हावड़ा
2,10,000/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, दिल्ली
1,24,250/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सांताक्रुज
1,02,000/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, उदयपुर
72,000/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, रायपुर
50,000/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, रीछेड़
42,000/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, डोम्बीवली
42,000/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, धुबड़ी
42,000/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सिसोदा
30,000/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, उचानामंडी
28,990/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, आमेट
22,000/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, हांसी
20,500/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, शोलापुर
20,000/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, टोहाना
19,800/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, चंगड़ाबांधा
17,200/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, वेल्लूर
17,000/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, बोलपुर
16,200/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, कलांवली
14,000/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, आसीन्द
12,505/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, साकरी
11,000/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, श्रीगंगानगर
11,000/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, जगदलपुर
10,800/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, जोरावरपुरा
10,200/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, मंडी आदमपुर
10,200/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, मुलुन्ड
10,200/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, तारानगर
9,000/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, रायपुरिया
6,666/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, करवड
6,200/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, ग्वालियर
5,760/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, रमन
5,300/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, मनेन्द्रगढ़
5,110/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, दुहाबी
5,101/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, घुस्कुरा
5,100/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, केसूर
5,100/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, रतलाम
5,100/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, ब्यावर
5,000/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, झाबुआ
5,000/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, नासिक
5,000/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, पड़ासली
5,000/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, कल्याणपुरा
4,200/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, नरवाना
2,200/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, डब्बाली
1,600/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, देवरिया
1,100/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, फतेहनगर
1,000/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, लुहारिया

सहभागिता योजना के अन्तर्गत एकत्रित कुल रु. 28,86,382/– की राशि में से रु. 14,95,636/– की राशि महासभा को प्राप्त हुई ।

सभा संवाद

★ पर्यूषण महापर्व

हम सबका सौभाग्य खिला है, प्रभु यह तेरापंथ मिला है,
एक सुगुरु के अनुशासन में एकाचार विचार विमल हो,
जय जय धर्म संघ अविचल हो।

- भिक्षु जन्मोत्सव, चातुमार्सिक चवदस व तेरापंथ स्थापना दिवस के गौरव का अद्‌भुत संयोग चातुर्मास की शुभ शुरूआत में सोने पे सुहागे जैसा विलक्षण प्रभाव दिखाता है। जिसके जोश और उत्साह से तेरापंथ सभा भवन तप-जप की उर्मियों से आप्लावित होकर भक्ति के मधुर संगान से गूंज उठते हैं, आध्यात्मिक धवलता से आच्छादित हो जाते हैं। चारित्रिक निर्मलता के बहाव में बहने को आतुर हो उठते हैं। ऐसा लगता है जैसे सावन-भादों के मौसम का अनुकूल योग और वंदनीय संत परम्परा का सुलभ सुयोग व उस पर 'आगम वाणी' श्रवण का दुलर्भ संयोग श्रद्धालुओं के उन्मेष को एकाएक परवान चढ़ा देता है। उर्ध्वगमन की उत्कण्ठा अपने चरम उत्कर्ष पर दिखाई देती है। **आचार्य भिक्षु की अन्तदृष्टि से उपजा तेरापंथ, धर्म के शंखनाद का पर्याय बन जाता है।**
- गुरु प्रेरणा और साधु-साध्वियों के अथक श्रम से निपजे मोतियों की चमक से पूरा तेरापंथ समाज दैदिप्यमान हो उठता है। दूसरी तरफ 124 क्षेत्रों में उपासक-उपासिकाओं का धर्म व संघ प्रभावना में लगा श्रम श्रावक समाज की साधना आराधना को और अधिक गहराई प्रदान कर रहा है। तप जप की हरीतिमा के साथ समन्वय की सरिता में खुशहाली व परमानन्द लहलहा उठता है जो क्षमा के उदारता पूर्ण संदेश के साथ मैत्री भरे व्यवहार से सम्पूर्ण विश्व को अपनेपन में बांध लेने की क्षमता विकसित करता है।
- श्रावक-श्राविकाओं के गद्‌गद् अन्तर हृदय की आवाज आभार भावों में घुलकर सात्विक गौरव के साथ धर्म की मशाल हाथों में लिये गतिमान रहने का संकल्प संजोती है।
- प्राप्त रिपोर्टों के आधार पर पर्यूषण पर्व की समायोजना में जिन कर्मठ कार्यकर्ताओं की समर्पित कर्मजा शक्ति से आध्यात्मिक फूल खिले उनकी आंशिक सौरभ स्वरूप सभाओं का नामोल्लेख आपके सम्मुख प्रस्तुत करते हुये अभ्युदय परिवार गौरव की अनुभूति करता है।

तेरापंथ सभा	सान्निध्य
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, शाहीबाग-अहमदाबाद	मुनिश्री धर्मेशकुमारजी
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, बेंगलोर	साध्वीश्री कुन्थुश्रीजी
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, चंडीगढ़	मुनिश्री विनयकुमारजी (आलोक)
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, पिंपरी चिंचवड़	समणी विपुलप्रज्ञाजी
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, आसीन्द	साध्वीश्री कुन्दनप्रभाजी
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, कालांवली	मुनिश्री विजयराजजी
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, नोखा	साध्वीश्री विजयश्रीजी
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, आर्यनगर	साध्वीश्री राजकुमारीजी
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, नोहर	साध्वीश्री स्वर्णरेखाजी
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, मण्डया	साध्वीश्री डॉ. पीयूषप्रभाजी
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, गदग	साध्वीश्री संगीतश्रीजी
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, हैदराबाद	साध्वीश्री कीर्तिलताजी
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, शाहदरा-दिल्ली	साध्वीश्री त्रिशलाकुमारीजी
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, कृष्णा नगर-दिल्ली	साध्वीश्री विद्यावतीजी
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, हनुमानगढ़ टाऊन	साध्वीश्री कनकरेखाजी
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, चैन्नई	साध्वीश्री कंचनप्रभाजी
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, दक्षिण हावड़ा	साध्वीश्री अणिमाश्रीजी
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, कोलकाता	साध्वीश्री मंगलप्रज्ञाजी
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, रीछेड़	साध्वीश्री गुणमालाजी
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, दक्षिण दिल्ली-महरौली	मुनिश्री सुखलालजी
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, देवगढ़	साध्वीश्री सम्यक्‌प्रभाजी
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सुजानगढ़	साध्वीश्री निर्वाणश्रीजी
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, इन्दौर	साध्वीश्री राकेशकुमारीजी

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, विशाखापट्टनम	साध्वीश्री कुन्दनरेखाजी
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, धूरी	साध्वीश्री धनश्रीजी
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, जोरहाट	समणीश्री कंचनप्रज्ञाजी
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, उदयपुर	मुनिश्री रवीन्द्रकुमारजी
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, हांसी	साध्वीश्री सोमलताजी
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, जयपुर	मुनिश्री सुरेशकुमारजी हरनावां
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, आसीन्द	साध्वीश्री कुन्दनप्रभाजी (उदासर)
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सूरत	साध्वीश्री काव्यलताजी
श्री जैन श्वेताम्ब तेरापंथी सभा, विजयनगर-बेंगलोर	समणी प्रशान्तप्रज्ञाजी
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, पूर्णियां	उपासक श्री कान्ति सिसोदिया, श्री अमृत मेहता
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, पालघर	उपासक श्री मोहनलाल सकलेचा, श्री पारस दुगड़
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, गुलाबबाग	उपासक श्री सुरेन्द्र सेठिया, श्री विजय बरमेचा
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, भीम	उपासक श्री जवरीलाल सकलेचा, श्री खुब्बीलाल जैन
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, बरपेटा रोड़	उपासक श्री उत्तमचन्द बोहरा, श्री धर्मचन्द चपलोत
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, मल्लारपुर	उपासिका श्रीमती कला बच्छावत, श्रीमती तारामणि दुधेड़िया
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, ग्वालियर	श्री रतन सिंयाल एवं श्री अशोक परमार
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, झकनावद	उपासक श्री पुखराज बाफना एवं श्री जीतूभाई भाभेरा
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, मनेन्द्रगढ़	उपासक श्री शम्भूलाल जैन एवं श्री प्रवीण कुमार सुराणा
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, मधुबनी भट्टा बाजार	उपासक श्री कान्ति सिसोदिया एवं श्री अमृत मेहता
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, उत्तर लखीमपुर	उपासक श्री हनुमानमल दुगड़ एवं श्री पुष्पराज सुराणा
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, अम्बिकापुर	उपासिका श्रीमती निर्मला जैन, श्रीमती राज गुनेचा एवं श्रीमती चन्द्रकला लूणिया
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सैंथिया	उपासक श्री कमलचन्द बैद एवं श्री संजय पारख
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, रायगंज	उपासिका श्रीमती रजनी दुगड़ एवं श्रीमती सुधा बोथरा
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, गोरीपुर	उपासिका श्रीमती जयश्री बरमेचा एवं श्रीमती सुखमाल शामसुखा
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, मनमाड	उपासक डॉ. राजेन्द्र पुगलिया, श्री शान्तिलाल कोठारी
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, जाखल मंडी	उपासिका श्रीमती सूरजबाई दुगड़, श्रीमती शोभा सेठिया

- इसके अतिरिक्त हमारे कुछ ऐसे उत्साही जागरूक क्षेत्र भी हैं जिन्होंने चारित्राआत्माओं की उपस्थिति के अभाव में भी सामूहिक रूप से धर्म सद्भावना का उदाहरण प्रस्तुत किया, वो क्षेत्र हैं :-

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, मदुरै	तेरापंथ सभाध्यक्ष श्री नैनमल कोठारी व मंत्री श्री धनराज लोढ़ा
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, केसिंगा	तेरापंथ सभाध्यक्ष श्री सुन्दरलाल जैन व मंत्री श्री सुरेशकुमार जैन
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, तेजपुर	तेरापंथ सभाध्यक्ष श्री उगमचन्द बैद
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, काठमाण्डु	तेरापंथ सभाध्यक्ष श्री ज्योतिकुमार बैंगाणी

- **इस वर्ष उपासक श्रेणी अध्यात्म वाहिनी के रूप में भारतवर्ष के 124 क्षेत्रों में पहुंची। लगभग 280 उपासक-उपासिकाओं ने पर्यूषण पर्व पर अध्यात्म की सरिता प्रवाहित की। महासभा के साथ-साथ लाखों-लाखों लाभान्वित श्रावक-श्राविकायें कृतज्ञ हैं गुरुवर की इस कल्याण वर्षा के लिये।**

★ श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा — पीतमपुरा-दिल्ली

सम्यक्त्व रत्न की सुरक्षा पर सारगर्भित संगोष्ठी — इस संगोष्ठी को सम्बोधित करते हुए साध्वीश्री यशोमतीजी ने फरमाया कि शम, संवेग एवं अनन्तानुबंधी कषायात्मा में सम्यक्त्व नहीं आ सकती है। पापभीरूता, संवदेनशीलाता, करूणा की भावना जिसमें है वह सम्यक्त्वी हो सकता है।

- **'यथार्थ को यथार्थ रूप में समझना आवश्यक है'** इस विषय पर बल देते हुये साध्वीश्री रचनाश्रजी ने कहा कि यह चिंतन संगोष्ठी देव, गुरु और धर्म की सम्यक् जानकारी दे रही है। तराजू का मध्य ठीक तो अंकन सही। इनके प्रति गहरी आस्था भव सागर को पार करा देती है।
- संगोष्ठी में काफी बड़ी संख्या में जिज्ञासु भाई-बहिनों की उपस्थिति के साथ रोहिणी तेरापंथ सभा के नव मनोनीत अध्यक्ष श्री नत्थूराम जैन एवं उनकी पूरी टीम का **शपथ ग्रहण समारोह** भी आयोजित किया गया। महासभा उपाध्यक्ष श्री विमल सुराणा ने नव मनोनीत अध्यक्ष को संघ व गुरु आज्ञा निष्ठा के साथ संस्था के विकास हित संकल्पित करवाया।
- कुशल संचालन ज्ञानशाला संयोजक श्री रतनलाल जैन ने किया।

★ श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा — हैदराबाद

देशभक्ति गीत गायन प्रतियोगिता का सफल आयोजन — स्वाधीनता दिवस पर तेरापंथ भवन में आयोजित देशभक्ति गीत गायन प्रतियोगिता के अंतर्गत हैदराबाद के उभरते गायक कलाकारों की सशक्त प्रस्तुति एवं बढ़िया तैयारी के साथ मंत्री श्री दिलीप डागा के संचालन में नये चेहरे देखने को मिले। संयोजक श्री राजकरण नाहटा, श्री हणुत सुराणा एवं सभा की पूरी टीम की मेहनत ने इस आयोजन को भव्यता प्रदान की। खचाखच भरे हॉल में गायक कलाकारों की प्रस्तुति जिसमें हिंदी, राजस्थानी देशभक्ति के गीतों ने श्रोताओं को झूमने एवं साथ में संगान करने पर विवश कर दिया।

- तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री राजकुमार सुराणा ने स्वागत में कहा कि उभरते कलाकार आगे बढ़े एवं धर्मसंघ का नाम रोशन करें।
- निर्णय का दायित्व नगर मशहूर संगीतकार श्री कमल दायमा एवं श्री नवनीत झंवर ने संभाला।
- साध्वीश्री कीर्तिलताजी की सशक्त प्रेरणा ने कार्यक्रम की सफलता को चार चांद लगा दिये।

★ आन्ध्र प्रादेशिक द्वि-दिवसीय उपासक व ज्ञानशाला प्रशिक्षक सेमिनार - आओ! करें उद्योत कि ज्ञान की बढ़ती रहे ज्योत— संघीय शक्ति को वर्धापित करती उपासकों व ज्ञानशाला प्रशिक्षकों की सशक्त शृंखला निर्माण हित आयोजित इस शिविर के उद्घाटन सत्र में साध्वीश्री कीर्तिलताजी ने अपने प्रवचन में उपासकों व ज्ञानशाला प्रशिक्षकों को प्रेरणा देते हुये फरमाया कि सच्ची लगन व अटूट धैर्य वाला व्यक्ति ही सच्चा उपासक बन सकता है।

- प्रशिक्षक श्री डालमचन्द नौलखा ने ज्ञान, दर्शन, चारित्र की व्याख्या करते हुये कहा कि सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन व सम्यक् चारित्र की आराधना करने वाला अंतर्मुखी बन सकता है। साध्वीश्री श्रेष्ठप्रभाजी ने भी अपने श्रद्धासिक्त भावों की प्रस्तुति दी।
- द्वितीय सत्र में साध्वीश्री पूनमप्रेक्षाजी ने उपासकों, प्रशिक्षकों को संघ के प्रति अपना तन, मन, धन के विसर्जन की प्रेरणा दी, साध्वीश्री शान्तिलताजी ने सबको उपासक श्रेणी से जुड़ने की रूप रेखा बताई, प्रेक्षा प्रशिक्षक श्री माणकचन्द रांका ने आवश्यक जानकारी दी।
- तृतीय सत्र में श्री डालमचन्द नौलखा ने आचार्य श्री तुलसी व आचार्य श्री महाश्रमणजी के गीतों को संगीतमय धुन व म्यूजिक के साथ शानदार प्रस्तुति देते हुये सबको भक्ति रस से सरोबार कर दिया।
- शिविर के प्रारम्भ में स्थानीय सभाध्यक्ष श्री राजकुमार सुराणा ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। इस अवसर पर 8 वर्षीय बालक जयकुमार पींचा की अठाई तप के पचखाण से शिविर तप सौरभ से महक उठा।

★ श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा — चैन्नई

63वां वार्षिक अधिवेशन संवैधानिक गरिमा के साथ सम्पन्न — तेरापंथी सभा, चैन्नई का 63वां वार्षिक अधिवेशन तारीख 28 जुलाई को साध्वीश्री कंचनप्रभाजी आदि ठाणा 5 के मंगल सान्निध्य में सम्पन्न हुआ।

- अधिवेशन की अध्यक्षता निवर्तमान अध्यक्ष श्री जयंतीलाल सुराणा ने की। अधिवेशन कई चिंतन व मनन के साथ सुचारू रूप से चला।
- चुनाव अधिकारी श्री विमलकुमार सेठिया ने कार्यवाही को अपने अधीन करते हुए श्री पुखराज बड़ोला को आगामी वर्ष 2013-14 के कालमान हेतु अध्यक्ष घोषित किया। इस पर सभी का बहुमत प्राप्त हुआ। श्री पुखराज बड़ोला चैन्नई सभा के वरिष्ठ व जिम्मेदार सदस्य हैं। कई महत्वपूर्ण पद संभाल चुके हैं। श्री पुखराज बड़ोला ने इसे सहर्ष स्वीकृत करते हुए अपनी नई टीम की घोषणा की।
- साध्वीश्री कंचनप्रभाजी व साध्वीश्री मंजूरेखाजी ने नई टीम को शुभाशीष प्रदान करते हुए फरमाया कि समाज को नई ऊंचाईयों तक पहुंचाने का प्रयत्न करें।

- इसी क्रम में 31 जुलाई को महासभा के उपाध्यक्ष श्री जी. सुकनराज परमार द्वारा नव मनोनीत टीम को शपथ ग्रहण करवायी गयी। पूर्वाध्यक्ष श्री देवराज आच्छा के सफल संचालन में कार्यक्रम स्वस्थ वातावरण में उत्साह के साथ संचालित हुआ। साध्वीश्रीजी के सान्निध्य में निवर्तमान अध्यक्ष व मंत्री ने वर्तमान अध्यक्ष व मंत्री को अपना दायित्व हस्तांरित कर संघ समर्पण के भावों को उत्कर्षता प्रदान की।

★ **दादा-दादी शिविर बना चित्त समाधि का आधार —** दादा-दादी का नाम आते ही एक बेहद ममतामयी, गरिमामयी छवि दिल में उभरती है। उम्र के इस पड़ाव को जीवन की तीसरी अवस्था कहा जाता है। भगवान् महावीर की यह वाणी - **''चओ अच्चेइ जोव्वणं च''** अर्थात् यौवन बीत रहा है अवस्था आगे बढ़ रही है जहां शारीरिक दुर्बलतायें अपना रंग दिखाने लग जाती है। इस स्थिति में स्वयं का मानसिक संतुलन बना रहे, अशुभ विचार हावी न होने पायें, स्वयं को कर्म बंधन से बचाते रहें इसलिये सतत् समता में प्रतिष्ठित रहने का सलक्ष्य प्रयत्न हो, तभी शिविर की सफलता सुनिश्चित हो सकेगी। उपरोक्त विचार दादा-दादी शिविर में संबोध देते हुये साध्वीश्री कंचनप्रभाजी ने व्यक्त किये।

- साध्वीश्री मंजूरेखाजी ने प्रेरणा देते हुये फरमाया कि इन बुजुर्ग अभिभावकों ने अपने आध्यात्मिक संस्कार अपनी संतानों को दिये हैं जिससे स्वस्थ पारिवारिक जीवनशैली प्रतिष्ठित हुयी है।
- शिविर व्यवस्था के संयोजक श्री सम्पत चोरड़िया का श्रम सराहनीय रहा। तेरापंथी सभाध्यक्ष श्री पुखराज बड़ोला के निर्देशन में मंत्री श्री अशोक खतंग के संचालन में शिविर सफलता के साथ सम्पन्न हुआ, जिसका प्रमाण है दादा-दादी शिविर में 70 वर्ष से ऊपर लगभग 100 श्रावक-श्राविकायें संभागी बने।

★ श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा — जयपुर

साधना के पंख खोल - मोक्ष के आसमां में, उड़ान भरने को तत्पर - मुमुक्षु मिलन का अभिनन्दन — तेरापंथ धर्मसंघ के 11वें अधिशास्ता आचार्य श्री महाश्रमणजी के कर कमलों से भागवती दीक्षा से पूर्व शिक्षण प्रशिक्षण के लिये पारमार्थिक शिक्षण संस्था जैन विश्व भारती, लाडनूं में प्रवेश करने के उपलक्ष्य में मुमुक्षु मिलन बाफना की वैराग्य भावना के सम्मान में जौहरी बाजार स्थित मिलाप भवन में मुनिश्री सुरेशकुमारजी 'हरनावां' के सान्निध्य में अभिनन्दन समारोह आयोजित किया गया।

- समारोह को सम्बोधित करते हुये मुनिश्री सुरेशकुमारजी 'हरनावां' ने फरमाया कि साधना का जीवन बच्चों का खेल नहीं है। मुमुक्षु मिलन बाफना तेरापंथ धर्मसंघ के लिये समर्पित होने जा रही है। नदी के वेग की तरह हमेशा साधना में प्रवाहमान रहना ही मुमुक्षु मिलन के जीवन का लक्ष्य होना चाहिये।
- मुनिश्री सम्बोधकुमारजी ने संयोजकीय वक्तव्य में कहा कि जीवन के इर्द-गिर्द जब भौतिक चकाचौंध की बेतहाशा भीड़ हो तब मन के कौने में वैराग्य की ज्योत्सना एक महान् आश्चर्य है।
- तेरापंथ महिला मंडल के समूह स्वर से शुरू हुये समारोह में मुमुक्षु मिलन ने कहा कि दुनिया की दलदल से निकलकर आज अगर मैं मुमुक्षु के जीवन की देहलीज पर खड़ी हूँ तो इसका समूचा श्रेय मुनिश्री सुरेशकुमारजी व मुनिश्री सम्बोधकुमारजी को जाता है। उन्होंने मुनिवृंद के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुये सभी से क्षमायाचना की व अपने संकल्प पर अटल रहने का आशीर्वाद चाहा।
- कार्यक्रम में मुमुक्षु के पिता उपासक श्री सुरेश बाफना, माता श्रीमती आशा बाफना, बहिन सुश्री नीलम बाफना ने भावपूर्ण विचारों से मुनिवृंद के प्रति व श्रावक समाज के प्रति आभार व्यक्त किया।
- समारोह में तेरापंथ धर्मसंघ की अनेक इकाईयों के समर्पित दायित्व बोधधारियों ने अपने भावपूर्ण विचारों की प्रस्तुति देते हुये उनके साधना के पथ पर अग्रसर जीवन के प्रति मंगल कामनायें व्यक्त कर मुमुक्षु भावों को बहुमान दिया।

★ श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा — कोलकाता

ग्यारह नवरंगी की तपचश्चर्या का महातपोयज्ञ - तप की पवित्र वेदी पर गुंजित हुयी त्याग की मंगल मन्त्र ध्वनि — तपस्या जीवन का सच्चा शृंगार है। उसमें भी नवरंगी तप का विशेष आकर्षण होता है। साध्वीश्री अणिमाश्रीजी एवं साध्वीश्री मंगलप्रज्ञाजी के सान्निध्य में ग्यारह नवरंगी तपोभिनन्दन का उत्साहपूर्ण तेजोमय कार्यक्रम समायोजित हुआ। समारोह में एक साथ सैंकड़ों-सैंकड़ों तपस्वी भाई-बहिनों को देखकर हर व्यक्ति रोमांचित प्रतीत हो रहा था।

- इस महातपोयज्ञ में संभागी तपस्वियों के सम्मान समारोह में सेवड़ाफुल्ल, रिसड़ा, हिंदमोटर, बोकारो, कोडरमा, उत्तरपाड़ा, बाली-वैल्लूर, लिलुआ, उत्तर हावड़ा, बड़ा बाजार, उत्तर कोलकाता, मध्य कोलकाता, पूर्वांचल दक्षिण कोलकाता एवं दक्षिण हावड़ा

के लगभग 3,500 लोग उपस्थित थे। कोलकाता परिचय यात्रा के दौरान साध्वीश्रीजी का इन सभी क्षेत्रों में पदार्पण हुआ था। एक-एक भाई-बहिन को तपोयज्ञ में अपनी आहुति देने की प्रबल प्रेरणा व सारणा वारणा की फलश्रुति है - यह तेरापंथ धर्मसंघ का विशाल तप अनुष्ठान।

- विशाल परिषद् को सम्बोधित करते हुए साध्वीश्री अणिमाश्रीजी ने अपनी श्रद्धा दिव्य शक्तिधर आचार्य तुलसी को व महाऊर्जा के अक्षय स्रोत परम श्रद्धास्पद आचार्य श्री महाश्रमणजी को समर्पित करते हुए 11 नवरंगी के अनूठे तप आयोजन की सफलता से कृतार्थता का अनुभव किया एवं तप के रथ पर आरूढ़ तपस्वियों के दृढ़ संकल्प को साधुवाद देते हुये तप के क्षेत्र में गति-प्रगति करने की मंगलकामना अभिव्यक्त की।
- सभा को सम्बोधित करते हुए साध्वीश्री मंगलप्रज्ञाजी ने कहा कि साध्वीश्री अणिमाश्रीजी ने पूज्य गुरुदेव श्री महाश्रमणजी की शक्ति से जामवंत का कार्य करके कोलकाता के हनुमानों को जगा दिया है, जिससे इतनी विशाल संख्या में इतने तपस्वियों को एक साथ देख रही हूँ।
- साध्वीश्री सुधाप्रभाजी साध्वीश्री समत्वयशाजी एवं साध्वीश्री मैत्रीप्रभाजी ने तपस्या से संदर्भित परिसंवाद् प्रस्तुत कर परिषद् को अध्यात्म सुधा से सरोबार कर दिया।
- परमश्रद्धास्पद आचार्यप्रवर के ऊर्जामय मंगल संदेश का वाचन साध्वीश्री सुधाप्रभाजी एवं श्रद्धेया महाश्रमणीवरा के मंगल संदेश का वाचन अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा श्रीमती सूरज बरड़िया ने किया।
- कोलकाता सभा के अध्यक्ष श्री अमरचन्द दुगड़, मंत्री श्री विमल बैद एवं उनकी टीम ने तपानुमोदना गीत की सशक्त प्रस्तुति दी। दक्षिण हावड़ा सभाध्यक्ष श्री मालचन्द भंसानी, मंत्री श्री मदन नाहटा एवं मीडिया प्रभारी श्री प्रकाश मालू ने नवरंगी तप का मनोहारी प्रतीक चिन्ह साध्वीश्रीजी को भेंटकर तपोयज्ञ में संभागी सभी तपस्वियों को गौरव के साथ सम्मानित कर तप की अनुमोदना की।
- **विशेष ध्यातव्य है कि** आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी के अवसर पर साध्वीश्रीजी ने 9 नवरंगी तपोयज्ञ से जुड़ने का आह्वान किया किन्तु आचार्य तुलसी के नाम का चमत्कार घटित हुआ। ऐसा लगता है आचार्य तुलसी ने अपने नाम के साथ एकादशम् आचार्य के नाम को और जोड़ लिया है इसीलिये 9 नवरंगी की जगह हुआ 11 नवरंगी का विलक्षण ऐतिहासिक तपोमहायज्ञ। **इस तपोमहायज्ञ में 115 भाई-बहिनों ने 9 की तपस्या का अर्ध्य चढ़ाया। एक सौ एक भाई-बहिनों ने अठाई, 99वें भाई-बहिनों ने सात की तपस्या, 102 भाई-बहिनों ने छः की तपस्या, 99वें भाई-बहिनों ने पंचोला, 102 भाई-बहिनों ने चोला, 105 भाई-बहिनों ने तेला, 121 भाई-बहिनों ने बेला एवं सैंकड़ों-सैंकड़ों भाई-बहिनों ने उपवास कर महातपोयज्ञ में तप की समिधा अर्पित कर अध्यात्म की तेजस्विता को वर्धापित किया।**

★ श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा — दिल्ली

धर्मसंघ की अध्यात्मवाहिनी उपासक - श्रेणी की गति हुयी और भी तीव्र

द्वि दिवसीय उपासक शिविर का सफल आयोजन — द्विदिवसीय उपासक शिविर शासनश्री मुनिश्री सुखलालजी, मुनिश्री मोहजीतकुमारजी के निर्देशन में वरिष्ठ उपासक श्री डालमचन्द नौलखा एवं उपासक श्री महावीरप्रताप दुगड़ के प्रशिक्षण से संपादित किया गया। शिविर में 64 शिविरार्थियों ने अपनी सहभागिता दर्ज कर उपासक श्रेणी के प्रति बढ़ते आकर्षण को उजागर किया।

- वरिष्ठ उपासक श्री डालमचन्द नौलखा ने शिविर में आत्मकर्तृत्ववाद, कर्मवाद, जैन धर्म, तेरापंथ जैन तत्व दर्शन आदि के संदर्भ में विस्तार से जानकारी दी। उपासक श्री महावीरप्रताप दुगड़ ने शिविरचर्या की जानकारी के साथ समसामायिक विषय पर विशेष प्रकाश डाला।
- मुनिवरों के द्वारा शिविरार्थियों को प्रशिक्षण के साथ उपासकों की महत्ता, उपयोगिता एवं अर्हता का सम्बोध भी प्राप्त हुआ।

★ श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा — पीलीबंगा

संयम की दीपशिखा से ज्योतित सद्भावना का अभिनन्दन — साध्वीश्री मधुरेखाजी ठाणा 4 के पावन सान्निध्य में वैरागिन बहिन पूजा का अभिनन्दन समारोह आयोजित किया गया।

- जगरावां से समागत पूजा जो इस संसार की मोह-माया त्याग कर सन्यास के पथ पर अग्रसर होने को संकल्पबद्ध है अपने परिवारजनों के साथ साध्वीश्रीजी से मंगल आशीर्वाद लेने हेतु पहुंची।
- साध्वीश्री मधुरेखाजी ने साधु जीवन को दोधारी तलवार बताते हुये बहिन पूजा को प्रेरणा प्रदान की कि जो गुरु के प्रति समर्पित है उसका जीवन देवताओं के लिये भी ईर्ष्या का विषय बन जाता है।

- साध्वीश्री सविताश्रीजी व साध्वीश्री सुव्रतयशाजी ने मधुर गीतिका द्वारा व साध्वीश्री मधुयशाजी ने कविता द्वारा मुमुक्षु पूजा के भावी जीवन के लिये शुभकामना दी।
- जगरावां से पधारे श्री चन्द्रभान बंसल ने पूजा का जीवन परिचय सुनाया व इस समारोह में योग प्रशिक्षक श्री ओमप्रकाश, जैन सभा के अध्यक्ष श्री मूलचन्द बांठिया, तेरापंथ सभा के अध्यक्ष श्री डूंगरमल दुगड़, नगरपालिका पीलीबंगा के उपाध्यक्ष श्री कमलापति जैन आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

★ श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा — शाहीबाग, अहमदाबाद

उपासक परिचय कार्यशाला — उपासक श्रेणी की बढ़ती उपयोगिता को मद्देनजर रखते हुये तेरापंथ भवन, शाहीबाग-अहमदाबाद में उपासक परिचय व प्रेरणा कार्यशाला का आयोजन मुनिश्री धर्मेशकुमारजी के सान्निध्य में किया गया। मुनिश्रीजी ने प्रेरणा देते हुये कहा कि देशभर से लगभग 300 उपासक सेवायें दे रहे हैं क्षेत्रों की अपेक्षा से और अधिक आवश्यकता है। अहमदाबाद क्षेत्र से नये उपासक तैयार हों ऐसा विशेष प्रयास करना है।

- राष्ट्रीय संयोजक श्री डालमचन्द नौलखा ने प्रशिक्षण प्रदान करते हुये जैन धर्म, तेरापंथ, संवर-निर्जरा, पुण्य-पाप, शुभ-योगआदि पर विस्तार से सरल भाषा में विवेचन किया।
- तेरापंथ सभा अहमदाबाद अध्यक्ष व मंत्री के स्वागत भावाभिव्यक्ति के साथ संयोजक श्री जवेरीलाल संकलेचा ने कार्यशाला की जानकारी प्रदान की एवं आभार ज्ञापित किया।

★ श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा — चंडीगढ़

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष के संदर्भ में उत्साह का चढ़ता पारावार (भेंटवार्ता का आयोजन) — पंजाब के मुख्यमंत्री श्री प्रकाशसिंह बादल ने आचार्य श्री तुलसी को नमन करते हुए कहा कि मैं अणुव्रत आंदोलन के साथ हूँ, आचार्य श्री तुलसी विचार दर्शन के साथ हूँ क्योंकि उन्होंने राष्ट्र के निर्माण में अहम् भूमिका निभाई है। **ऐसे महापुरुष का जन्म शताब्दी वर्ष पंजाब सरकार बड़े ही धूमधाम से मनायेगी। उपरोक्त विचार मुख्यमंत्री श्री बादल ने मुनिश्री विनयकुमारजी 'आलोक' के साथ एक विशेष भेंटवार्ता में रखे।**

- इस अवसर पर मुनिश्री विनयकुमारजी 'आलोक' ने कहा कि आचार्य श्री तुलसी ने समाज सेवा का मार्ग केवल अपने लिए नहीं चुना बल्कि समाज कल्याण के लिये पूरे संघ को इस दिशा में लगाया। उन्होंने राष्ट्र के सम्मुख पेश ज्वलंत समस्याओं पर केवल चिंतन ही नही किया उन्हें दूर करने का मार्ग भी सुझाया। ऐसे महान् व्यक्ति के जन्म शताब्दी वर्ष के लिये पंजाब सरकार ने जो निर्णय लिया है वह स्वागत योग्य है।
- मुख्यमंत्री श्री प्रकाशसिंह बादल से मिलने गये शिष्टमंडल में मुनिश्री अभयकुमारजी के अतिरिक्त श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, चंडीगढ़ के अध्यक्ष श्री पी. सी. सिंगला, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष श्री मनोज जैन, मंत्री श्री रवि चोपड़ा, हरियाणा जेल के अपर महानिरीक्षक श्री जगजीतसिंह, श्री जितेन्द्रसिंह, श्री सतीश जैन और श्री अशोक जैन की सक्रिय सहभागिता रही। भेंटवार्ता के दौरान अध्यात्म एवं नैतिकता की आवश्यकता पर भी विचारों का आदान प्रदान हुआ।

★ श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा — राजमुन्द्री

अंधकार को निगल कर उजाले बांटती ज्ञान दीप शिखाओं को प्रणाम — संस्कारों से पोषित बालपीढ़ी संघ के सुन्दर भविष्य का आगाज है। उनके प्रशिक्षण की कुशल व्यवस्था हेतु ज्ञानशाला प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर 29 जून से 1 जुलाई 2013 तक उपासक श्रेणी के राष्ट्रीय प्रभारी श्री डालमचन्द नौलखा के दिशा-निर्देश में सानन्द सम्पन्न हुआ।

- सहभागी प्रशिक्षिकाओं की संख्या विज्ञ-10, विशारद-5 रही। प्रशिक्षिकाओं के अलावा अन्य 15 श्राविकाओं ने भी इसका लाभ उठाया।
- ध्यातव्य है कि राजमुन्द्री में साप्ताहिक ज्ञानशाला प्रति रविवार दो घंटे चल रही है एवं प्रमाणित प्रशिक्षिका विज्ञ की 4 बहिनें अपना योगदान दे रही हैं।

★ **भक्त और भगवान के बीच तादात्म्य स्थापित करते संगीत के मधुर सुर —** रविवार दिनांक 30 जून को शिविर के दौरान रात्रिकालीन सायं 7 बजे से 10 बजे तक संगीतमय धुनों पर आध्यात्मिक गीतों का संगान श्री डालमचन्द नौलखा द्वारा बहुत ही

उल्लासपूर्ण वातावरण में प्रस्तुत किया गया। पूरा वातावरण आध्यात्मिक रस में ओत:प्रोत हो रहा था। लगभग 100 व्यक्तियों ने संगीत श्रवण कर भक्ति के आनन्द से अपनी आत्मा को परमानन्द से जोड़ लिया।

- आन्ध्र प्रदेश का यह तटीय क्षेत्र 48 तेरापंथी परिवारों की संघीय शक्ति के साथ संघ प्रभावक कार्यक्रमों में एकजुट होकर सक्रियता का परिचय दे रहा है।

★ श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा — विशाखापट्टनम

विशाखापट्टनम में रचा गया एक साथ 64 अठाईयों का इतिहास — संख्या की दृष्टि से छोटा किन्तु धर्म भावना प्रभावना में सघन क्षेत्र विशाखापट्टनम में साध्वीश्री कुन्दनरेखाजी की प्रेरणा एवं पावन सान्निध्य में 64 भाई-बहिनों ने आठ-आठ दिनों तक निराहार रहकर तपस्या के क्षेत्र में कीर्तिमान बनाया है। ''इस अनूठे महायज्ञ में सभी उम्र के भाई-बहिनों ने अपनी संभागिता निभाई। सभी के प्रति मंगल भावना।'' साध्वीश्री कुन्दनरेखाजी ने उक्त विचार तेरापंथ भवन में सामूहिक अठाई तप अभिनन्दन समारोह के अवसर पर व्यक्त किये।

- साध्वीश्री सौभाग्ययशाजी, साध्वीश्री कल्याणयशाजी की मंगलमय गीत प्रस्तुति व क्षमा के नीर से फलते तप की अनुमोदना में व्यक्त विचाराभिव्यक्ति तप की महिमा को जन-जन के हृदय में प्रतिष्ठापित करने में सफल सिद्ध हुयी।
- आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में 100 अठाई का आह्वान किया गया, जिसमें से 64 भाई-बहिनों ने यह तप एक साथ सानन्द सम्पन्न किया।
- कार्यक्रम का कुशलतापूर्वक संचालन श्री श्रेयांस नाहटा ने किया। इस कार्यक्रम में विशेष आकर्षण था साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी का संदेश जिसने ओज आहार के रूप में नवीन ऊर्जा का संचरण किया।

★ श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा — उदयपुर

सेवाभाव बढ़ाये, आपसी सद्भाव — 21 अगस्त चितरंजन मोबाईल यूनिट, उदयपुर संभाग के सहयोग से आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष के अंतर्गत नि:शुल्क तीसरे मेडिकल कैम्प का आयोजन स्थानीय तेरापंथ भवन, बिजोलिया हाऊस में किया गया।

- इस कैम्प में डॉ. राजेन्द्र कुमार सामर द्वारा डायबिटीज, थाईराईड, बी.पी. आदि बीमारियों के रोगियों को आवश्यक परामर्श दिया गया। मरीजों की आवश्यकतानुसार ईसीजी, ब्लड शुगर, ब्लड प्रेशर आदि की जांच नि:शुल्क की गयी। शिविर में लगभग 72 व्यक्तियों ने उपलब्ध जांच सुविधा का लाभ लिया।
- शिविर का उद्घाटन तेरापंथी सभाध्यक्ष श्री राजकुमार फतावत ने किया। इसी शृंखला का चौथा मेडिकल कैम्प आगामी 8 सितम्बर को आयोजित होगा। ऐसी जानकारी उपलब्ध हुयी।

★ श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा — बेंगलोर

श्रीमती रोहिणीदेवी गणधर चौपड़ा बनी साध्वीश्री रोहिणीप्रभाजी

मनुष्यत्व, श्रुति, श्रद्धा और संयम है - चार दुर्लभ तत्व - साध्वीश्री कुन्थुश्रीजी — समाधि मरण श्रावक जीवन का मनोरथ होता है। उसकी सिद्धि की सौगात बिरले मनस्वीयों को ही प्राप्त होती है। श्रीमती रोहिणीदेवी ऐसे ही सौभाग्य की संवाहक थी। वो हर साधक व आराधक के लिए प्रेरक है। बेंगलोर तेरापंथ धर्मसंघ के इतिहास में पहली बार अमृत पुरुष आचार्य श्री महाश्रमणजी की आज्ञानुसार साध्वीश्री कुन्थुश्रीजी द्वारा गत 9 दिनों से संथारारत सुश्राविका श्रीमती रोहिणीदेवी गणधर चौपड़ा उम्र 88 वर्ष (धर्मपत्नी स्व. शिवलालजी गणधर चौपड़ा) बालोतरा को प्रात: 8.35 बजे पर ''मुनि दीक्षा'' प्रदान की गई। ''मुनि दीक्षा'' के तुरन्त पश्चात् नव दीक्षित साध्वीश्री रोहिणीप्रभाजी अपने अन्तर में लीन हो गई एवं प्रात: 9.21 मिनट पर अरिहंत शरण (देवलोकगमन) को प्राप्त हुई। **19 सितम्बर को तिविहार 24 सितम्बर को चौविहार अनशन में ही दीक्षा की भावना की अभ्यर्थना व गुरु कृपा का प्रसाद पा बहिन का जीवन उत्कर्ष की अद्भुत सुनहरी दास्तान बन गया।**

★ संयम में पराक्रम, अध्यात्म का स्वीकरण, छठे गुणस्थान पर आरोहण एवं समाधिमरण - पर गूंज उठे श्रद्धा के स्वर — अमृत पुरुष आचार्य श्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वीश्री कुन्थुश्रीजी ठाणा 4 के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, गांधीनगर-बेंगलोर में साध्वीश्री रोहिणीप्रभाजी का स्मृति समारोह समायोजित किया गया।

- कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रज्ञा संगीत सुधा, तेयुप के मंगलाचरण से हुआ। साध्वीश्री रोहिणीप्रभाजी ने 88 वर्ष की अवस्था में दीक्षा स्वीकार की, 13 दिन के अनशन में 27 सितम्बर को संयम का मार्ग वीरवृत्ति से स्वीकार किया।
- **साध्वीश्री कुन्थुश्रीजी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि पूज्य गुरुदेव ने असीम अनुकम्पा करके मुझे यह एक सुनहरा अवसर प्रदान किया। मैं अपना सौभाग्य मानती हूँ पहली बार दीक्षा देने का अवसर आपने दिलवाया। साध्वीश्री रोहिणीप्रभाजी ने संयम में पराक्रम किया। वृद्धावस्था में अपनी शक्ति का नियोजन संयम में करके दृढ़ मनोबल का परिचय दिया। चढ़ते परिणामों में दीक्षा स्वीकार की। यह अल्पकालीन संयम पर्याय उनके लिए वरदान बन गया। संथारे में दीक्षा बेंगलोर की पुण्य धरा पर एक नया इतिहास हो गया। समस्त जैन समाज अन्य समाज में तेरापंथ धर्मसंघ की विशेष प्रभावना हुई। यह सब परमाराध्य आचार्यप्रवर का आशीर्वाद ऊर्जा एवं पुण्य प्रताप की ही फलश्रुति है।**
- साध्वीश्री कंचनरेखाजी, साध्वीश्री सुमंगलाश्रीजी, साध्वीश्री सुलभयशाजी ने सुमधुर गीत के द्वारा साध्वीश्री रोहिणीप्रभाजी के प्रति भावना अभिव्यक्त की।
- नव दीक्षित साध्वीश्री रोहिणीप्रभाजी मुनिश्री पुनीतकुमारजी के संसारपक्षीय दादीजी महाराज थे। मुनिश्री मदनकुमारजी, मुनिश्री जिनेशकुमारजी, मुनिश्री पुनीतकुमारजी का संदेश वाचन सभा मंत्री श्री कमलसिंह दुगड़ ने किया।
- सभाध्यक्ष श्री गौतम कोठारी, तेयुप अध्यक्ष श्री दीपक गोठी, महिला मंडल उपाध्यक्ष श्रीमती निर्मला सौलंकी, महासभा के सहमंत्री श्री भूपेन्द्र कुमार मूथा, अणुव्रत समिति अध्यक्ष श्री प्रकाश लोढ़ा, तुलसी महाप्रज्ञ चेतना केन्द्र अध्यक्ष श्री शान्तिलाल बोराणा, ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री अमृतलाल भंसाली सभी ने वक्तव्य, गीत, कविता के द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित की। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री श्री कमलसिंह दुगड़ ने किया। पूरी सभा 'ले ल्यो नर भव रो शुभ स्वाद्' की उत्कल तरंगों से आलोड़ित हो रही थी।

संस्कारों की संपदा है, उत्कृष्ट अमूल्य
धन वैभव संसार का, क्या रखता है मूल्य
– आचार्य तुलसी

पूरे भारतवर्ष में संस्कारों से गुलजार बाल पीढ़ी की प्रतिभा को उभारते 'ज्ञानशाला दिवस' का संस्कृति परक आयोजन

★ श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा — गदग

ज्ञानशाला एक संस्कारशाला — साध्वीश्री संगीतश्रीजी के सान्निध्य में 'ज्ञानशाला दिवस' बड़ी धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम का प्रारम्भ ज्ञानशाला बच्चों के अर्हम्-अर्हम् गीत से हुआ।

- साध्वीश्री संगीतश्रीजी ने ज्ञानशाला को ज्ञान अर्जित करने का सबसे सशक्त माध्यम बताया। इसी क्रम में साध्वीश्री शान्तिप्रभाजी, साध्वीश्री कमलविभाजी व साध्वीश्री मुदिताश्रीजी ने बच्चों को कोरे कागज की तरह बताते हुये उन पर गौरवशाली आलेख उकेरने की प्रेरणा प्रदान की। सभा अध्यक्ष श्री सूरजमल जीरावाला, मंत्री श्री अमृतलाल कोठारी सहित गणमान्य व्यक्तियों ने अपने समीचीन विचारों से परिषद् को लाभान्वित किया।
- महिला मंडल व ज्ञानशाला के बच्चों ने बड़ी रोचकता के साथ लघु नाटिका प्रस्तुत की।
- हुबली, गंगावती, बल्लारी, मुंडरगी आदि क्षेत्रों से बड़ी संख्या में बच्चें व अधिकारीजन समारोह में उपस्थित थे। ज्ञानार्थी बच्चों द्वारा अनुशासन, मर्यादा के साथ रैली निकाली गयी जिसकी पूरे क्षेत्र ने भूरि-भूरि प्रशंसा की।
- नमस्कार महामंत्र पर प्रश्नमंच, ड्राईंग कंपीटीशन व कुछ गेम्स के साथ रोचक कार्यक्रम समायोजित हुये। जिसकी संयोजना श्रीमती सरस्वती कोठारी ने की।

★ श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा — विजयनगर-बेंगलोर

ज्ञानशाला सुखी जीवन की विजय माला — दि 25 अगस्त, सभा भवन में समणीश्री प्रशान्तप्रज्ञाजी के सान्निध्य में ज्ञानशाला दिवस का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम रैली का विशाल आयोजन किया गया जिसमें 90 बच्चों ने अपनी सहभागिता दर्ज की।

- कार्यक्रम का शुभारम्भ ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं के मंगलाचरण से हुआ। सभाध्यक्ष श्री शोभाचन्द दुगड़ ने आगुंतकों का स्वागत किया। कार्यक्रम में तेयुप के पूर्व अध्यक्ष श्री विमल कटारिया, वर्तमान अध्यक्ष श्री राकेश छाजेड़, अभातेयुप के कोषाध्यक्ष श्री कैलाश बोराणा, अभ्युदय संपादिका श्रीमती वीणा बैद ने अपने प्रगति सूचक विचार प्रस्तुत किये।

सभा संवाद

- ज्ञानशाला संयोजिका श्रीमती कंचन छाजेड़ ने ज्ञानशाला की रिपोर्ट द्वारा प्रगति आलेख प्रस्तुत किया।
- समणीश्रीजी ने एक कहानी के माध्यम से बहुत ही रोचक अंदाज में बच्चों को लोभ एवं क्रोध न करने की प्रेरणा दी और माताओं को प्रथम संस्कार की जननी बताते हुय बच्चों में संस्कार भरने के गुर सिखाये।
- ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा लघु नाटिका 'संस्कारों की जननी मां' शीर्षक से सफल मंचन किया गया।
- श्री राकेश दुधेड़िया के कुशल संचालन में उपस्थित जनसमूह की प्रमोद भावना ज्ञानशाला दिवस का गौरव संवर्धित कर रही थी।

★ श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा — नौगांव

ज्ञानशाला में गुंथी ज्ञान के मनकों की अनूठी माला — दिनांक 25 अगस्त, ज्ञानशाला दिवस बहुत ही उत्साहपूर्वक मनाया गया, कार्यक्रम का आयोजन दो सत्रों में किया गया प्रथम सत्र में प्रात: 7.00 बजे बच्चों द्वारा भव्य शोभा यात्रा को गति दी गयी। जिसमें 70 बच्चों ने भाग लिया। बच्चों के गगनभेदी नारों से जुलूस गुंजायमान हो रहा था।

- समारोह के दूसरे सत्र में सभा के अध्यक्ष श्री बजरंगलाल नाहटा, तेयुप के अध्यक्ष श्री अजीत कोठारी, महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती गुड्डीदेवी नाहटा व ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं ने अपने विचार रखे।
- मुख्य अतिथि के रूप में तेजपुर से पधारे ज्ञानशाला के आंचलिक संयोजक श्री दिलीप दुगड़ की उपस्थिति में बच्चों द्वारा बहुत ही रोचक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये जिसमें नमस्कार मुद्रा, कव्वाली, नाटक ने दर्शकों का मन मोह लिया।
- श्रीमती ललिता बोथरा ने कार्यक्रम का संचालन बहुत ही सुन्दरता से किया व श्रीमती सरोज कुवाड़ के आभार ज्ञापन के साथ उत्साहपूर्ण वातावरण में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में लगभग 55 ज्ञानार्थी एवं अच्छी संख्या में अभिभावकों की उपस्थिति से छोटे से क्षेत्र की छोटी सी कोशिश बड़ा आकार लेती प्रतीत हो रही थी।

★ श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा — गुवाहाटी

ज्ञान गुणों की गहराई - जीवन बगिया महकाई — दिनांक 25 अगस्त को ज्ञानशाला दिवस का प्रभावक कार्यक्रम समणी निर्देशिका कंचनप्रज्ञाजी के पावन सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। सुबह ज्ञानार्थी रैली का कार्यक्रम प्रभावी रहा। तेरापंथी सभा, तेयुप, महिला मंडल, ज्ञानशाला व्यवस्थापकों, प्रशिक्षकों का सहयोग कार्यक्रम की सफलता में कार्यकारी रहा।

★ श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा — कांकरिया मणिनगर

ज्ञानशाला सुन्दर संस्कृति की परिभाषा — अहमदाबाद क्षेत्र के सभा भवन में ज्ञानशाला दिवस का सफल आयोजन किया गया। जिसमें ज्ञानशाला के बच्चों, प्रशिक्षिकाओं, अभिभावकों व पदाधिकारियों सभी की उत्साहवर्धक उपस्थिति रही।

- कार्यक्रम के दौरान ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों द्वारा सुदर प्रस्तुति, रोचक गेम व गेम में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले बच्चों को पुरस्कार देकर सभाध्यक्ष श्री रायचन्द लूणिया द्वारा बच्चों को प्रोत्साहित किया गया।
- ज्ञानशाला संयोजिका श्रीमती सावित्रीदेवी लूणिया व ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं व ज्ञानशाला के क्षेत्रीय संयोजक श्री राधेश्याम दुगड़ ने भी अपने सारगर्भित विचार व्यक्त किये।
- ज्ञान का उजास व उसकी तेजस्विता का प्रभाव कार्यक्रम में संभागी व्यक्ति के मुख-मुख पर छलक रहा था।

★ श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा — उधना

ज्ञानशाला - मोल बढ़ायें नर भव का — कार्यक्रम के रूप में ज्ञानशाला दिवस का रैली, नाटिका एवं अनेकों सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के साथ गुजरात ज्ञानशाला आंचलिक संयोजक श्री कोमल डांगी, सहसंयोजक श्री प्रवीण मेड़तवाल, श्री लक्ष्मीलाल बाफना-महासभा कार्यकारिणी सदस्य आदि की गरिमामयी उपस्थिति में आयोजित किया गया। सभाध्यक्ष श्री जयसिंह रांका की अध्यक्षता में उपस्थित लगभग 750 लोगों के बीच कार्यक्रम का सफल संचालन श्रीमती मधु चपलोत व श्रीमती ऊषा सिरोहिया ने किया।

★ श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा — इन्दौर

उत्कृष्ट कच्चे माल के निर्माण की इण्डस्ट्री — ज्ञानशाला को बताते हुये साध्वीश्री राकेशकुमारीजी ने ज्ञानशाला दिवस पर ज्ञानशाला की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। ज्ञानशाला प्रभारी श्रीमती उर्मिला घीया एवं ज्ञानशाला बच्चों की सुंदर प्रस्तुतियों ने कार्यक्रम को सफल बनाया।

★ श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा — श्री डूँगरगढ़

संस्कारों की अमृत धारा से सिंचित बाल पीढ़ी ही देश का सुदृढ़ भविष्य — इस चिंतन के साथ कार्यक्रम साध्वीश्री संगीतप्रभाजी की मंगल प्रेरणा प्राप्त कर 'प्रेरणा रैली' के साथ प्रारम्भ हुआ।

- सभा रूप में विसर्जित रैली को जिलाध्यक्ष (सेवा भारती) श्री रूपचन्द सोनी ने संबोधित किया व ज्ञानशाला को वर्तमान् की समस्याओं के समाधान के रूप में स्वीकार किया।
- बालकों की उत्साहवर्धक प्रस्तुतियों एवं सम्पूर्ण सभा को श्रीमती मधु झाबक ने अपने कुशल संयोजकत्व में बांधे रखा एवं ज्ञानशाला संयोजक श्री प्रदीप झाबक कृतज्ञ भाव प्रस्तुति में सफल हुये।

★ श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा — गुलाबबाग

ज्ञानशाला - ज्ञान का बहता, कल कल करता मधुरिम झरना — तेरापंथ सभा, ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं, महिला मंडल एवं तेरापंथ युवक परिषद् के सम्मिलित प्रयासों से ज्ञानशाला ज्ञानार्थियों ने ज्ञानशाला दिवस पर खुलकर अपनी प्रतिभा को उजागर किया एवं 'रैली द्वारा' ज्ञानशाला की गूंज को घर-घर पहुंचाया। विचाराभिव्यक्ति प्रशिक्षिका श्रीमती स्नेहा पुगलिया, श्रीमती किरण पुगलिया, श्रीमती प्रतिभा पुगलिया व शैली दुगड़ ने व हिना दुगड़ ने संचालन की बागडोर संभाली।

★ श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा — उदयपुर

संस्कार सम्पन्न बाल पीढ़ी ले रही सुन्दर आकार — ज्ञानार्थी बच्चे एवं उनकी प्रशिक्षिकाओं के साथ विभिन्न संस्कारवर्धक संदेशों को हाथ में लिए रैली द्वारा ज्ञानशाला दिवस का शुभारम्भ हुआ। रैली तेरापंथ भवन, अणुव्रत चौक पहुंची तब शासनश्री मुनिश्री रवीन्द्रकुमारजी एवं तपोमूर्ति मुनिश्री पृथ्वीराजजी के सान्निध्य में ज्ञानशाला दिवस के भव्य समारोह की शुरूआत हुई।

- ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं द्वारा मंगलाचरण की प्रस्तुति हुई। आनन्द नगर ज्ञानशाला द्वारा आचार्य श्री तुलसी जैन जीवन शैली, भूपालपुरा ज्ञानशाला द्वारा संस्कार गीत, तुलसी निकेतन ज्ञानशाला द्वारा लघु नाटिका ज्ञानशाला आधारित भामाशाह मार्ग ज्ञानशाला द्वारा नैतिक गायन गीत की प्रस्तुति हुई।
- समारोह को सम्बोधित करते हुए शासनश्री मुनिश्री रवीन्द्रकुमारजी ने फरमाया कि एक बालक का निर्माण करना परिवार का निर्माण करना होता है। संस्कारी परिवार का निर्माण का मतलब, संस्कारी समाज का निर्माण करना होता है।
- समारोह को सम्बोधित करते हुये तपोमूर्ति मुनिश्री पृथ्वीराजजी ने फरमाया कि ज्ञानशाला संस्कारों के जागरण की शाला है।

★ श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा — बेंगलोर

ज्ञान की उर्मियों का उजास - जगाये सुनहरे भविष्य का विश्वास — साध्वीश्री कुन्थुश्रीजी के सान्निध्य में ज्ञानशाला दिवस का भव्य आयोजन रैली की विशाल आयोजना के साथ हुआ। लगभग 500 ज्ञानार्थियों की विशाल उपस्थिति में कार्यक्रम की संस्कृति परक सुन्दर प्रस्तुति में एक-एक ज्ञानार्थी की प्रतिभा मुखर हो रही थी।

- साध्वीश्री कुन्थुश्रीजी ने बालकों अभिभावकों का उत्साहवर्धन करते हुए ज्ञानशाला को बालक के सर्वांगीण विकास का आधार बताया। उन्होंने प्रेरणा प्रदान की कि ज्ञान धन के साथ, अध्यात्म रत्न से समृद्ध होने का सुनहरा अवसर उपलब्ध कराती है ज्ञानशाला जो देश के भावी कर्णधारों के निर्माण का सशक्त आधार है वो निरन्तर उन्नत बने ऐसा प्रयास करें।
- इस अवसर पर सभाध्यक्ष श्री गौतम कोठारी, ज्ञानशाला क्षेत्रीय संयोजिका श्रीमती नीता गादिया, कर्नाटक स्तरीय संयोजक श्री हरखचन्द ओस्तवाल व सह संयोजक श्री सुरेश नाहर व स्थानीय संयोजक श्री प्रेम कोठारी ने समीचीन विचारों से परिषद् को समृद्ध बनाया।

घड़ी की सुई अपने नियम से चलती है
इसलिए लोग उस पर विश्वास करते है ।
नियम का सम्मान करो विश्वास अपने आप बढ़ेगा ।

- आचार्य महाप्रज्ञ

नव-निर्वाचन

वापी

अध्यक्ष	:	श्री सम्पतलाल कोठारी
उपाध्यक्ष	:	श्री गुलाब चौपड़ा
		श्री पुखराज सोनी
		श्री देवराज डांगर
मंत्री	:	श्री मीठालाल कच्छारा
सहमंत्री	:	श्री ललित दुगड़
		श्री सुनील तलेसरा
कोषाध्यक्ष	:	श्री प्रकाश मेहता

चेन्नई

अध्यक्ष	:	श्री पुखराज बडोला
उपाध्यक्ष	:	श्री तनसुखलाल नाहर
		श्री गौतमचन्द एस. बोहरा
मंत्री	:	श्री अशोक कुमार खतंग
सहमंत्री	:	श्री राजकरण बैद
		श्री मूलचन्द रांका
कोषाध्यक्ष:		श्री सुरेश कुमार नाहर

अजमेर

अध्यक्ष	:	श्री गौतमचन्द श्रीश्रीमाल
उपाध्यक्ष	:	श्री महेन्द्र सुराणा
		श्री बाबूलाल छाजेड़
मंत्री	:	श्री लाभचन्द श्रीश्रीमाल (जैन)
सहमंत्री	:	श्री प्रकाश एस. छाजेड़
कोषाध्यक्ष	:	श्री नेमीचन्द श्रीश्रीमाल

नान्देशमा

अध्यक्ष	:	श्री नानालाल जोधराज सिंघवी
उपाध्यक्ष	:	श्री गणेशलाल भोरीराम चतरावत
		श्री पुखराज अर्जुनलाल बदामिया
मंत्री	:	श्री प्रकाशचन्द हीरालाल सिंघवी
सहमंत्री	:	श्री शान्तिलाल माणकचन्द सिंघवी
कोषाध्यक्ष	:	श्री बाबूलाल भूरीलाल सिंघवी

उदासर

अध्यक्ष	:	श्री आनन्दमल महनोत
उपाध्यक्ष	:	श्री अमरचन्द सेठिया
		श्री त्रिलोकचन्द महनोत
मंत्री	:	श्री कमल महनोत
सहमंत्री	:	श्री चैनरूप महनोत
कोषाध्यक्ष	:	श्री हनुमानमल महनोत

छोटीखाटू

अध्यक्ष	:	श्री सरबतचन्द धाड़ीवाल
उपाध्यक्ष	:	श्री ताराचन्द धाड़ीवाल
मंत्री	:	श्री कपूरचन्द बैद
उपमंत्री	:	श्री पदमचन्द कोचर
कोषाध्यक्ष	:	श्री गौतमचन्द धाड़ीवाल

सूरतगढ़

अध्यक्ष	:	श्री मांगीलाल रांका
उपाध्यक्ष	:	श्री भीखाराम श्रीश्रीमाल
मंत्री	:	श्री राजेन्द्र प्रसाद चौपड़ा
सहमंत्री	:	श्री पवन जैन
कोषाध्यक्ष	:	श्री मालचन्द रांका

सायरा

अध्यक्ष	:	श्री कन्हैयालाल सोलंकी
उपाध्यक्ष	:	श्री महेन्द्र कुमार सिसोदिया
मंत्री	:	श्री कान्तिलाल भोगर
सहमंत्री	:	श्री जीतमल मेहता
कोषाध्यक्ष	:	श्री जवाहरलाल सिसोदिया

देवगढ़ - मदारिया

अध्यक्ष	:	श्री हीरालाल आच्छा
उपाध्यक्ष	:	श्री बसंतीलाल आच्छा
		श्री बिमल कुमार बोहरा
मंत्री	:	श्री एम. राजेन्द्र कुमार मेहता
सहमंत्री	:	श्री हरीश कुमार पोखरणा
कोषाध्यक्ष	:	श्री प्रकाशचन्द पोखरणा

धुरी

अध्यक्ष	:	श्री कमल सिंह गोलेछा
उपाध्यक्ष	:	श्री अनोपचन्द सेठिया
		श्री भीकमचन्द नाहटा
मंत्री	:	श्री विमल ओसवाल
सहमंत्री	:	श्री प्रसन्न कुमार दुगड़
		श्री विनोद कुमार कुंडलिया
कोषाध्यक्ष	:	श्री महेन्द्र कुमार सेठिया (प्रथम)

देशनोक

अध्यक्ष	:	श्री आशकरण फलोदिया
उपाध्यक्ष	:	श्री सन्तोकचन्द सिपानी
मंत्री	:	श्री जीतमल बांठिया
सहमंत्री	:	श्री केशरीचन्द सांड
कोषाध्यक्ष	:	श्री मोतीलाल नाहर

भगवतगढ़

अध्यक्ष	:	श्री चन्द्रसेन जैन
उपाध्यक्ष	:	श्री मोहनलाल जैन
		श्री रामफूल जैन
मंत्री	:	श्री हरिवल्लभ जैन
सहमंत्री	:	श्री सुरेशचन्द जैन
कोषाध्यक्ष	:	श्री संतोषचन्द जैन

कलकत्ता पूर्वांचल

अध्यक्ष	:	श्री भूपेन्द्र सामसुखा
उपाध्यक्ष	:	श्री जतनमल गेलड़ा
		श्री निर्मल कुमार दुगड़
मंत्री	:	श्री विक्रम दुधोड़िया
सहमंत्री	:	श्री पवन कुमार सुराणा
कोषाध्यक्ष	:	श्री हंसराज बोथरा

बोरज

अध्यक्ष	:	श्री बाबूलाल ढ़ीलीवाल
उपाध्यक्ष	:	श्री रमेशचन्द गुन्देचा
मंत्री	:	श्री लालचन्द परमार
कोषाध्यक्ष	:	श्री घेवरमल परमार

केलवा

अध्यक्ष	:	श्री कुन्दनमल साभर
उपाध्यक्ष	:	श्री मूलचन्द मेहता
		श्री तनसुख बोहरा
		श्री धर्मेश कोठारी
मंत्री	:	श्री दिनेश कोठारी
सहमंत्री	:	श्री महेन्द्र कोठारी
कोषाध्यक्ष	:	श्री देवीलाल बी. कोठारी

मोलेला

अध्यक्ष	:	श्री बाबूलाल टेकचन्द बोहरा
उपाध्यक्ष	:	श्री डालचन्द रोड़ीलाल बोहरा
मंत्री	:	श्री गणेशलाल बोहरा
सहमंत्री	:	श्री गमेरमल वीरचन्द बोहरा
कोषाध्यक्ष	:	श्री बिहारीलाल शंकरलाल चोरड़िया

बल्लारी

अध्यक्ष	:	श्री निर्मल कोठारी
उपाध्यक्ष	:	श्री बसन्त कुमार छाजेड़
		श्री मंगलचन्द नाहर
मंत्री	:	श्री सम्पतराज खींवसरा
सहमंत्री	:	श्री सोहनराज गोलेच्छा
		श्री इन्द्रचन्द बाफना
कोषाध्यक्ष	:	श्री अशोक कुमार छाजेड़

रोहिणी दिल्ली

अध्यक्ष	:	श्री नत्थूराम जैन
उपाध्यक्ष	:	श्री विमल महनोत
		श्री संजय जैन
		श्री जगमन्दर सिंह जैन
मंत्री	:	श्री नरपत मालू
सहमंत्री	:	श्री धनपत बोथरा
		श्री वेदप्रकाश जैन
कोषाध्यक्ष	:	श्री गिरीश जैन

भायंदर

अध्यक्ष	:	श्री मोतीलाल सी. दुगड़
उपाध्यक्ष	:	श्री निर्मल जैन
		श्री कनक सिंघी
		श्री मनोहर मेहता
मंत्री	:	श्री भगवती बागरेचा
सहमंत्री	:	श्री विजय बोकड़िया
		श्री मिलन सेठिया
कोषाध्यक्ष	:	श्री प्रदीप बच्छावत

नव-निर्वाचन

बाली-बेलुड़

अध्यक्ष	:	श्री जुगराज सिंघी
उपाध्यक्ष	:	श्री शान्तिलाल श्यामसुखा
मंत्री	:	श्री गुलाबचन्द दुगड़
सहमंत्री	:	श्री कमल बैद
कोषाध्यक्ष	:	श्री विजय सिंह लुणावत

कांकरोली

अध्यक्ष	:	श्री नन्दलाल बाफना
उपाध्यक्ष	:	श्री प्रकाश सोनी
		श्री हरकलाल बाफना
		श्री हिम्मत कोठारी
मंत्री	:	श्री विनोद बड़ाला
सहमंत्री	:	श्री मदन धोका
		श्री घनश्याम तलेसरा
कोषाध्यक्ष	:	श्री छोटूलाल तलेसरा

मालवा सभा, रतलाम

अध्यक्ष	:	श्री पूनमचन्द बरबेटा
उपाध्यक्ष	:	श्री मांगीलाल भंसाली
		श्री प्रसन्नचंद जैन
		श्री लक्ष्मीचंद नलवाया
		श्री पारसमल कोटड़िया
		श्री दिलीप माण्डोत
मंत्री	:	श्री शांतिलाल तलेरा
सहमंत्री	:	श्री ज्ञानमल मूणत
		श्री विमल पितलिया
कोषाध्यक्ष	:	श्री सोहनलाल भांगू

डूंगरी

अध्यक्ष	:	श्री मांगीलाल हिरन
उपाध्यक्ष	:	श्री बाबूलाल भटेवरा
मंत्री	:	श्री जयन्तीलाल भटेवरा
सहमंत्री	:	श्री सुरेश मांडोत
कोषाध्यक्ष	:	श्री जितेन्द्र बोल्या

मीरजापुर

अध्यक्ष	:	श्री भीखमचन्द सेठिया
उपाध्यक्ष	:	श्री इन्द्रचन्द सामसुखा
मंत्री	:	श्री अनूपचन्द पुगलिया
उपमंत्री	:	श्री जितेन्द्र बरड़िया
कोषाध्यक्ष	:	श्री महावीर सेठिया

बेंगलोर

अध्यक्ष	:	श्री गौतमचन्द कोठारी
उपाध्यक्ष	:	श्री बद्रीलाल पीतलिया
		श्री जसवन्तराज गादिया
		श्री हाथीमल बैद
मंत्री	:	श्री कमलसिंह दुगड़
सहमंत्री	:	श्री उदयलाल कटारीया
		श्री सुरेश तातेड़
कोषाध्यक्ष	:	श्री महावीर चौरड़िया
संगठन मंत्री	:	श्री राजेश चावत

गुरु कृपा व अनुशासन में फलते सेवा के आश्वासन का अभिनन्दन

चिंता और निराशा से कभी भी किसी समस्या का हल नहीं निकला है और न कभी निकलने की संभावना है ।

-आचार्य तुलसी

- मुनि अजयप्रकाशजी ने बहुत बड़ी तपस्या की है, इनकी साधना का खूब अच्छा क्रम चलता रहे।
- मुनि पारसकुमारजी हमारे तपस्वी मुनि है। ये चलते फिरते तपस्या करते रहते हैं। पंचोले आदि की तपस्या तो इनके लिए दाल-रोटी समान है।
- मुनि विवेककुमारजी, मुनि रम्यकुमारजी, मुनि सिद्धकुमारजी बाल मुनि लोच कराते हैं। यह कितनी बड़ी बात है। संकल्प बल के बिना क्या केश लोच करवाना संभव हो सकता है?
- समणी चैतन्यप्रज्ञाजी व रोहितप्रज्ञाजी एथेंस में अपनी प्रस्तुति देकर आयीं हैं। समणियों ने शिक्षा के क्षेत्र में विकास किया है, जैनिज्म का ज्ञान रखती हैं।
- समणी कुसुमप्रज्ञाजी साहित्यिक कार्य में लगी रहती हैं और काफी श्रम करती हैं, ये कल्याणकारी कार्यों में अपने श्रम का नियोजन करती रहें।
- तेरापंथी महासभा का लंबा इतिहास है। इसके निर्माण और विकास में कितने-कितने कार्यकर्ताओं ने अपने श्रम की आहुतियां दी हैं, अपने श्रम सीकरों से इस संस्था को सींचा है। कार्यकर्ता खपते हैं, तपते हैं, श्रम करते हैं, तब कोई संस्था इस रूप में सामने आती है। हमारे परमपूज्य आचार्यों का मार्गदर्शन, छत्रछाया और वरदहस्त तेरापंथी महासभा को प्राप्त हुआ। नींव के पत्थर भले न दिखें, किन्तु प्रासाद को खड़ा रखने में उनका कितना बड़ा योगदान होता है। यदि उन्हें उपेक्षित कर दिया जाए तो भवन कैसे खड़ा रह सकेगा? तेरापंथी महासभा के निर्माण और विकास में अनेकानेक कार्यकर्ताओं का महत्त्वपूर्ण श्रम रहा है।
- तेरापंथ समाज की दृष्टि से देखा जाए तो तेरापंथ की प्रतिनिधि संस्था के रूप में किसी संस्था का नाम उल्लिखित करना हो तो मेरे चिंतन के अनुसार एकमात्र तेरापंथी महासभा है। इसके अतिरिक्त दूसरी किसी भी संस्था को तेरापंथ समाज की प्रतिनिधि संस्था के रूप में प्रस्तुत नहीं किया जा सकता। इस दृष्टि से तेरापंथी महासभा तेरापंथ समाज की महत्त्वपूर्ण संस्था है।
- तेरापंथी महासभा एक विराट संस्था है। कितनी-कितनी गतिविधियां इसके साथ जुड़ी हुई हैं। इतनी गतिविधियों को महासभा के पदाधिकारी कैसे संभाल लेते हैं, कितना कार्य करते हैं। बड़े-बड़े संघीय और सामाजिक कार्य महासभा द्वारा संचालित हो रहे हैं। इस प्रकार तेरापंथी महासभा तेरापंथ समाज की समर्थ और सक्षम संस्था है।
- तेरापंथी महासभा तेरापंथ समाज की गौरवपूर्ण संस्था है, जिसके पास कार्यकर्ता-शक्ति है और अच्छा प्रबंधन भी है। सामाजिक दृष्टि से तेरापंथी महासभा जैसी संस्था की छत्रछाया मिलना मेरे ख्याल से समाज की भाग्यवत्ता की बात है।
- स्थानीय स्तर पर देखा जाए तो तेरापंथी सभाएं तेरापंथ की प्रतिनिधि संस्थाएं होती हैं। सभाएं बहुत कार्य करती हैं, बहुत जागरूक रहती हैं। तेरापंथी सभाएं बड़ी जिम्मेदारी से अपना कार्य करती हैं।
- तेरापंथी सभाएं साधु-साध्वियों से बहुत निकटता से जुड़ी होती हैं, क्योंकि उनके विहार, चतुर्मास, प्रवास आदि में तेरापंथी सभा का बड़ा दायित्व होता है। सभाएं इस दृष्टि से कितना ध्यान भी देती हैं। हमारे श्रावक लोग कितने विनीत और अपने दायित्व के प्रति कितने जागरूक और निष्ठावान हैं। वे साधु-साध्वियों की सेवा पर ध्यान देते हैं, उनकी मार्ग व्यवस्था का दायित्व भी संभालते हैं। हम तो साधु-साध्वियों को भेज देते हैं, पर मार्ग-सेवा तथा क्षेत्रों में कार्यक्रमों के संचालन की दृष्टि से तेरापंथी सभाएं कितना बड़ा योगदान देती हैं, श्रम करती हैं, सेवा करती हैं। अन्य संस्थाओं का योगदान भी इसमें रहता होगा। तेरापंथ के श्रावक-श्राविका समाज में कितनी श्रद्धा, निष्ठा और शासनपति के इंगित के प्रति कितना समर्पण का भाव है।
- स्थानीय स्तर पर तेरापंथी सभा समाज की बड़ी महत्त्वपूर्ण संस्था है। उसके प्रतिनिधि इस सम्मेलन में उपस्थित हुए हैं। उन्हें इस त्रिदिवसीय सम्मेलन में खूब अच्छी खुराक मिले, खूब पोषण मिले। महासभा और सभाएं खूब आध्यात्मिक-धार्मिक सेवा देती रहें, शुभाशंसा।
- महासभा का तेरापंथ शासन की सेवा में महनीय योगदान रहा है। महासभा के कार्यकर्ता जगह-जगह पहुंच कर काम कर रहे हैं। वे पवित्र कार्य की दिशा में और अच्छा कार्य करते रहें।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा

Jain Swetambar Terapanthi Mahasabha

(ISO 9001 : 2008 Certified Organisation)
3, Portuguese Church Street, Kolkata - 700 001.
Phone : 033-22357956, 22343598, Fax : 033-22343666., e-mail : info@jstmahasabha.org

President's Office :
C/o. Maloo Constructions , # A-204/205, 2nd Floor, 25/26, Brigade Majestic, 1st Main, Gandhinagar, Bangalore - 560 009.
Phone : 080-2226 5737, Fax : 080-2226 4530, e-mail : hiralal.maloo@gmail.com